दिसंबर, 2023

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्रिका

विकल्प मीमांसा

मूल्य : 40 रुपये

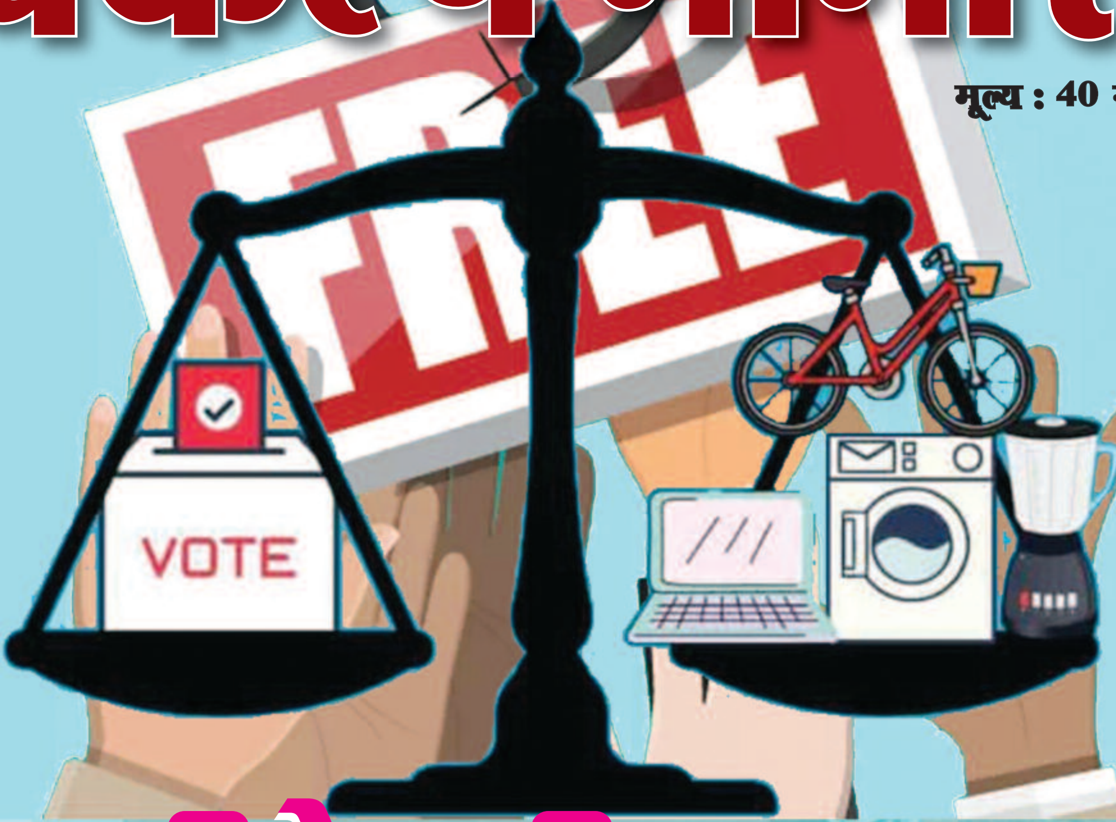

फ्री रेवड़ी कल्चर एक चुनौती

रिश्तों में आजादी...

पेज-14

खादी की रिकॉर्ड तोड़ मांग ...

पेज-17

IEESH MALIK 9990781242

FLEX
HI
FLEX
VISITING CARD
@400/-

IEESH PRINT PACKER'S

Bahamas
action
FLITE
Lakhani SHOES
sparx
Aqualite
RELAXO

Footwear

हमारे यहाँ कार बस ट्रक, टैम्पू, स्कूटर, बाईक एवं दुकान आदि के इन्श्योरेन्स किये जातें है।

Gali No. 12, Wazirabad Village, Delhi-110084

विकल्प मीमांसा

वर्ष-10, अंक : 6, दिसंबरः 2023

मुद्रक, प्रकाशक
व संपादक
सारिका झा
संरक्षक
गिरिजेश चौबे
सलाहकार संपादक
अवधेश कुमार सिंह
धर्मेंद्र मणि राजेश
प्रबंध संपादक
मनोज कुमार झा
कार्यकारी संपादक
बी.के. झा, अमित तिवारी
संवाददाता
ईश मलिक, सुकान्ति साहू, उदयराज सिंह, मयंक वाजपेयी,
अमित कुमार झा
ब्यूरो
मुंबई :- आदित्य झा
लखनऊ :- मनोज त्रिपाठी
पटना :- कुणाल कुमार
लखीमपुर खीरी :- आशीष कटियार
झारखंड :- चिन्मय दत्ता
जयपुर :- अनिल शर्मा
वरिष्ठ संवाददाता :- श्याम कमल देवराज पाण्डेय
विज्ञापन प्रतिनिधि
भूपेंद्र कुमार ओझा, नीरज ठाकुर
ग्राफिक डिजाइनर
प्रीति ओझा
कानूनी सलाहकार
रजनीश सिंह, ब्यूटी सिंह
प्रेरक
स्वर्गीय रत्नप्रभा सिंह
(सभी पद अवैतनिक हैं।)

अंदर के पन्नों पर

अगर जिंदगी में किसी तरह का कोई संघर्ष नहीं है तो समझिए कि प्रगति भी नहीं है – फ्रेडरिक डगलस

R.N.I. No. DELHIN/2014/57556

ड्रिफ्ट को गांधी पदक... :पेज-16

'प्रिजर्व द यूट्स'... :पेज-18

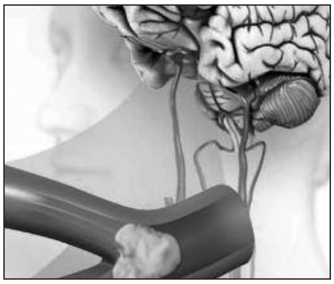

स्ट्रोक का बढ़ता खतरा... :पेज-21

सौंदर्य का जीवंत रूप... :पेज-22

सलारः प्रभास का कमबैक... :पेज-34

सभी विवादों का निपटारा दिल्ली की सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

मुद्रक तथा प्रकाशक सारिका झा द्वारा (स्वामी सारिका झा) के पक्ष में इंडिया ग्राफिक सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, एफ – 23 ओखला फेज-1, दिल्ली से मुद्रित तथा सी-163, गली नं. 38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3 से प्रकाशित, संपादक-सारिका झा

कार्यालय पता
सी-163, गली नं.38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3, नई दिल्ली-59
फोन नं. 9350993815, 9999496969, 9560747441

E-mail : vikalpmimansa@yahoo.in

हमारा संकल्प

विकल्प मीमांसा का यह अंक हमारे समाज के हर व्यक्ति को समर्पित है। इसका मूल उद्देश्य विशुद्ध पत्रकारिता के जरिए एक का संदेश दूसरे तक पहुंचाना है। इस पत्रिका में समाचार के साथ विचारों का भी मंथन आप पढ़ व महसूस कर सकेंगे। हमारी कोशिश लेख को उसी कलेवर में आपके सामने लाने की होगी, जैसा आप हमेशा से पढ़ना चाहते हैं। हम अपनी इस कोशिश से समाज के सही दिशा निर्देश के लिए सकारात्मक कदम उठाना चाहते हैं। हमें आपके साथ की जरूरत हैं। इस मासिक पत्रिका में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं से जुड़े लेख प्रकाशित किए जाएंगे। हमारा उद्देश्य उन पहलुओं पर भी गौर करना है, जो महत्वपूर्ण होकर भी संज्ञान में नहीं है। पत्रिका में आपके सुझाव एवं विचार सादर आमंत्रित हैं।

VIKALP MIMANSA

देश-दुनिया के
ताजा घटनाक्रमों
पर नजर रखने
और विभिन्न
मसलों पर नवीन
विचारों से अवगत
होने के लिए
विजिट करें

VIKALPMIMANSA.COM

सारिका झा

सतत विकास की बात

वर्ष 2022 में एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ राज्य सरकारों द्वारा मुफ्त प्रदान करने की घोषणाओं को फ्री रेवड़ी कल्चर का नाम दिया और इस चलन को देश के विकास के लिये घातक बताया। वर्ष बीत जाने के बाद भी यह कितना प्रासंगिक है और क्या यह बदस्तूर जारी रहने वाला है, सवाल इस पर खड़े होने लगे हैं। क्योंकि हाल ही में हुए पांच विधानसभा चुनावों में लगभग सभी पार्टियों द्वारा जनता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये बड़ी-बड़ी घोषणाएं की गई, मगर यह बात इतर है कि जनता ने अपनी समझ से भरोसा करके राज्य के नेतृत्व के लिये अपना मत दिया। इसका उदाहरण है कि राजस्थान में गहलोत सरकार के द्वारा चलाई जा रही कई लाभकारी योजनाओं के बावजूद जनता ने बीजेपी के वादों पर भरोसा किया, वहीं मध्य प्रदेश में बीजेपी की जीत में सत्ताधारी शिवराज सरकार की लाडली बहना योजना का महत्वपूर्ण स्थान रहा।

हालांकि बीजेपी अपनी जीत में इस बात की चर्चा करने से बचती नजर आई और सेहरा प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा दी गई विकास की गारंटी को पहनाया। लुभावनी घोषणाओं का असर कुछ हद तक छत्तीसगढ़ में भी दिखा, मगर चुनाव से ऐन वक्त पहले सत्ताधारी भूपेश बघेल पर लगे आरोप और बीजेपी के द्वारा छत्तीसगढ़ को नक्सल मुक्त करने के वादे ने सत्ता पलटने में अहम भूमिका निभाई। वहीं तेलंगाना में कांग्रेस ने पिछले 10 वर्षों से सत्तासीन भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के के. चन्द्रशेखर राव को कल्याणकारी योजनाओं के वादे के साथ हार का स्वाद चखाया और पहली बार राज्य में जीत हासिल की।

इन चुनावी परिणामों में भले ही अलग पार्टियों ने जीत हासिल की मगर उन्होंने अपने मनमोहक वादों से जनता को आकर्षित करने का खूब प्रयास किया। वास्तव में यह वादे कितने व्यवहारिक होंगे, इस पर किसी का ध्यान नहीं जाता। जबकि आरबीआई, विभिन्न राज्यों में लगातार होने वाले घाटे का हवाला देते हुए अंधाधुंध लुभावनी घोषणाओं पर विचार करने के लिये आगाह कर चुका है। आरबीआई की पेश रिपोर्ट में कहा गया कि राज्य सरकारें मुफ्त की योजनाओं पर खूब खर्च कर रही हैं, जिससे कर्जदार हो रही हैं। बावजूद इसके यह सिलसिला लगातार जारी है। घाटे और कर्ज के बाद भी आखिर क्यों मुफ्त रेवड़ी कल्चर अपने पैर पसार रहा है। इसके लिये दोषी क्या वह सीट है, जिस पर बैठकर यह कहा जाए कि वह सीट को और सीट उन्हें नहीं छोड़ती। जिसे बचाने और पाने के लिये हर वादे से गुजरना पड़ता है, चाहे वह प्रासंगिक न हो, अव्यवहारिक हो। सच्चाई तो यही है कि यह सीट वक्त के साथ हर किसी को खाली करनी पड़ती है, और फिर कोई नया उस पर बैठता है, और निर्देशित करता है। यहां, लोकतंत्र के सिस्टम में जनता की कितनी अहम भूमिका है, इसे समझने की भी जरूरत है। जनता मेहनत करती है, पैसे कमाती है और उसमें से टैक्स के नाम पर सरकार के खाते में पैसे जमा करती है, जिन्हें देश के विकास की योजनाओं पर खर्च किया जाना चाहिये। मगर जब यह पैसे विकास की योजनाओं से अलग लाभकारी योजनाओं पर खर्च किया जाने लगे तो सवाल उठना आवश्यक है। नेतृत्व का काम केवल सत्ता में मन लगाना नहीं बल्कि सबके विकास के बारे में सोचना है, क्योंकि यह उसकी पहली और आखिरी जिम्मेदारी है। कमजोर को मजबूती प्रदान करना और हर तरफ सतत विकास की जिम्मेदारी जिस सरकार की होती है, उसे उन उपायों पर सिरे से गौर करने की जरूरत है। यह कहावत भी सौ फीसदी सच है कि यहां मुफ्त में कुछ नहीं मिलता, किसी चीज को पाने के लिये मेहनत मशक्कत करनी पड़ती है। अगर मुफ्त में मिल जाए तो पाने वाला आराम पसंद हो जाता है। तो आखिर क्यों सरकारें किसी की गाढ़ी कमाई को लुभावने वादों से अन्य को कमजोर बनाने में व्यय करना चाहती है। जनता मात्र एक वोटर नहीं, बल्कि समाज का हिस्सा है, जो उसे मजबूती प्रदान करने में अहम भूमिका निभाती है। इसलिये यह जरूरी है कि समाज कल्याण के लिये सरकारें अगर कुछ करना चाहती हैं, तो रोजगार के अवसर पैदा करे, जनता को उन कौशल क्षमताओं से परिपूर्ण करे जो उसे मेहनत के साथ एक आत्मसम्मान की जिंदगी व्यतीत करने के लिये प्रेरित करता हो। असल में फ्री रेवड़ी कल्चर समाधान नहीं बल्कि एक ऐसा सफर है, जिस पर चलकर सबका विकास कहीं गुम हो रहा है।

फ्री रेवड़ी कल्चर एक चुनौती

इसमें कोई मतभेद या दो राय नहीं है कि लोगों की समस्याओं का समाधान खोजना, लोगों के जीवन स्तर को बेहतर करना और समय–समय पर लोगों को बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराना सरकारों का संवैधानिक और सामाजिक दायित्व है। जिसे सरकारें पहले भी सीमित रूप में करती रही हैं और आज व्यापक पैमाने पर कर रही हैं। इन्हीं प्रयासों के बीच से चिंता की लकीरें उत्पन्न हो रही हैं।

डॉ. उदय भान सिंह

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में एक बहुआयामी निहितार्थ वाले मुद्दे के रूप में फ्री रेवड़ी कल्चर का मुद्दा उभरकर सामने आया है, जिससे कोई राजनीतिक दल अछूता नहीं है। मुद्दा भविष्य के लिये एक गंभीर चुनौती उत्पन्न करता दिखाई पड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि अरविंद केजरीवाल के दिल्ली में सत्ता में आने के बाद भारतीय राजनीतिक परिदृश्य के क्षितिज पर फ्री रेवड़ी कल्चर को नया आयाम मिलता है। वर्ष 2022 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा लोगों को उपलब्ध करायी जा रही मुफ्त वस्तुओं और लोक लुभावन वादों को फ्री रेवड़ी कल्चर कहकर संबोधित किया। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिये गये इस नाम को लेकर एक बहस छिड़ गई। इसके पक्ष एवं विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किये जाने लगे हैं। हाल ही में संपन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में फ्री रेवड़ी कल्चर और लोक लुभावन वादों की चरम स्थिति देखने को मिली। इसमें कोई भी राजनीतिक दल पीछे नहीं रहा। यह अलग बात है कि जनता ने कुछ राजनीतिक दलों के लोक लुभावन वादों पर विश्वास नहीं किया।

2023 में संपन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में लोक लुभावनावाद एक नये स्तर पर पहुंच गया। लोक लुभावनावाद और फ्री रेवड़ी कल्चर संबंधित योजनाएं देश के अर्थ तंत्र को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगी। इसके गंभीर दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे। परंतु इसके बावजूद इस प्रवृत्ति पर विराम लगाने का साहस कोई भी राजनीतिक दल नहीं कर पा रहा है। इस प्रवृत्ति पर विराम लगाने या नियंत्रित करने के संदर्भ में चुनाव आयोग के भी हाथ बंधे हुए हैं और उसकी अपनी सीमाएं हैं। ऐसे में आखिरी उम्मीद उच्चतम न्यायालय से है, जिसके सामने रेवड़ी कल्चर को नियंत्रित एवं सीमित करने, उसको प्रतिबंधित करने के संदर्भ में दो याचिकाएं विचाराधीन हैं।

इसमें कोई मतभेद या दो राय नहीं है कि लोगों की समस्याओं का समाधान खोजना, लोगों के जीवन स्तर को बेहतर करना और समय-समय पर लोगों को बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराना सरकारों का संवैधानिक और सामाजिक दायित्व है। जिसे सरकारें पहलें भी सीमित रूप में करती रही हैं और आज व्यापक पैमाने पर कर रही हैं। यहीं से चिंता की लकीरें उत्पन्न हो रही हैं।

निसंदेह निःशुल्क सुविधाएं और वस्तुएं मिलने से लोगों को राहत मिलती है, उन पर आर्थिक बोझ कम होता है, जिससे उन्हें अपने जीवन स्तर में सुधार करने का अवसर मिलता है। निःशुल्क सुविधाएं और सेवाएं मिलने से लोगों की क्षमता में भी वृद्धि होती है। लोग स्वयं को उत्पादकीय गतिविधियों में नियोजित करने लगते हैं, जिसका समाज और अर्थव्यवस्था को दीर्घकालीन परिपेक्ष्य में सकारात्मक लाभ और लाभांश प्राप्त होता है, परंतु यह बहुत कम होता है।

इसका एक दूसरा पहलू यह है कि जब लोगों को वस्तुएं, सुविधाएं और सेवाएं निःशुल्क मिलने लगती हैं, तब एक प्रकार से सरकार पर उनकी

निर्भरता और आश्रयता बढ़ती जाती है और वह काम करने से पीछे हटने लगते हैं। लोगों के मन में यह भाव बैठ जाता है कि सरकार हमको निःशुल्क आवश्यक और बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराती रहेगी क्योंकि यह उसकी राजनीतिक मजबूरी है। इस सोच के कारण वह अपनी क्षमता का उपयोग नहीं करते हैं और परिश्रम करना बंद कर देते हैं।

निःशुल्क सुविधाएं प्रदान करना हमेशा उपयुक्त नहीं होता है। यह लोगों को भ्रष्ट और अक्षम बनाने का एक माध्यम है। इससे मुफ्तखोरी को बढ़ावा मिलता है और मतदाताओं को प्रलोभन दिया जाता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि यह मतदाताओं को एक प्रकार का रिश्वत है।

इसके माध्यम से मतदाताओं को आर्थिक रूप से पथभ्रष्ट और लोभी बनाने का प्रयास किया जाता है। चुनाव के समय मतदाताओं की नजर इस बात पर केन्द्रित हो जाती है कि कौन राजनीतिक दल कितना निःशुल्क उपहार उसे प्रदान कर रहा है।

फ्री रेवड़ी कल्चर के आर्थिक आयाम

फ्री रेवड़ी कल्चर के केवल सामाजिक आयाम ही नहीं बल्कि इसके आर्थिक आयाम भी हैं। सामान्यतः फ्री रेवड़ी कल्चर के आर्थिक आयामों को नकारात्मक रूप में भी देखा जाता है।

इसका आर्थिक पहलू यह है कि लोगों को सरकारी खजाने से जब निःशुल्क सुविधाएं और सेवाएं प्रदान की जाती हैं, तब यह देखना बेहद आवश्यक है कि इसका अर्थव्यवस्था और राजकोष पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है। क्या यह केन्द्र और राज्य की आर्थिक स्थिति के लिये बेहतर और टिकाऊ है? निःशुल्क बिजली उपलब्ध कराना, निःशुल्क खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराना, लोगों की ऋण माफी करना जैसी योजनाएं फ्री रेवड़ी कल्चर के उदाहरण हैं।

सरकार द्वारा जब लोगों को निःशुल्क सुविधाएं, वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध करायी जाती हैं तो इसके कारण राजकोष पर दबाव पड़ता है। सरकार के ऊपर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है। इस प्रकार सरकार के पास संसाधनों की कमी होने लगती है। जिसे पूरा करने के लिये सरकार को घरेलू और विदेशी पूंजी बाजार एवं मुद्रा बाजार से ऋण लेना पड़ता है। जिसके कारण सरकार की ब्याज देयता में वृद्धि होती है। यदि यह कल्चर लंबे समय तक कायम रहता है या जारी रखा जाता है तो इससे सरकार की आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे अत्यधिक कमजोर हो जाती है और सरकार आर्थिक संकट और ऋण के जाल में फंस जाती है।

फ्री रेवड़ी कल्चर के संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि निःशुल्क वस्तुएं, सुविधाएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराये जाने पर होने वाला व्यय एक कल्याणकारी व्यय है। इसको भी समझना अति आवश्यक है। राजकोष से व्यय के रूप में नीतिगत हस्तक्षेप जो प्रत्यक्ष उत्पादन तथा उत्पातपकता में वृद्धि सुनिश्चित नहीं करता, उसे निःशुल्क माना जा सकता है। ऐसे व्यय को जो सामाजिक, आर्थिक लाभ की संभावना उत्पन्न करते हैं, कल्याणकारी व्यय कहा जा सकता है। इसी स्पष्ट आधार पर सार्वजनिक वितरण प्रणाली, मनरेगा जैसी रोजगार गारंटी योजनाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य पर राज्यों के समर्थन को कल्याणकारी व्यय माना जाता है। दूसरी ओर निःशुल्क बिजली, पानी, मुफ्त सार्वजनिक परिवहन, कर्ज माफी आदि व्यय को अक्सर फ्रीबीज माना जाता है। समय और संदर्भ के साथ इसके मायने अथवा अर्थ बदल सकते हैं।

भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में गरीबी एवं बेरोजगारी की समस्या काफी व्यापक है। आर्थिक विषमता भी विद्यमान है। समाज के एक बड़े भाग के लोगों का जीवन स्तर काफी निम्न है। जिसे देखते हुए कभी-कभी निःशुल्क सुविधाएं, वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध कराना उचित लगता है कि इससे कुशल मानवीय पूंजी का सृजन होगा। कुशल

मानवीय पूंजी की उपलब्धता आर्थिक विकास के लिये अति आवश्यक आधार है।

कल्याणकारी योजनाएं और फ्री रेवड़ी कल्चर

राजनीतिक दलों को आज नहीं तो कल यह समझना ही होगा कि जितनी जरूरी जन कल्याणकारी योजनाएं है, उतनी ही जरूरी विकासात्मक योजनाएं हैं। यदि विकास की योजनाओं को गति नहीं दी गई तो फिर लोक लुभावन योजनाओं से पीछा नहीं छूटने वाला है। लोगों को मुफ्त, बिजली, पानी, राशन आदि के साथ अच्छे स्कूल, अस्पताल, कॉलेज, परिवहन के साधन, रोजगार के अवसर और सुरक्षा भी चाहिये। यह सब रेवड़ियां बांटने से संभव नहीं है। यह विकासात्मक योजनाओं को प्रभावपूर्ण तरीके से क्रियान्वित करने पर ही संभव है। सुखी लोक लुभावन योजनाओं की घोषणा करना जितना आसान है, उसे खत्म करना उतना ही कठिन है। वर्तमान में मनरेगा हो या प्रधानमंत्री गरीब अन्न कल्याण योजना हो, दोनों ही योजनाएं फ्री रेवड़ी कल्चर का सिंबल है। आज नहीं तो कल इसका मूल्यांकन करना ही होगा।

फ्री रेवड़ी कल्चर और गरीबी

लोगों को मुफ्त वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करने से गरीबी की बेड़ियां नहीं टूटेंगी। लोगों को उपलब्ध करायी जा रही निःशुल्क वस्तुएं और सेवाएं उनके लिये एक पेनकिलर है। इससे उनकी समस्या का समाधान नहीं होगा बल्कि इससे उन्हें केवल तात्कालिक राहत ही मिल रही है। इसका अर्थ है कि गरीबी की जंजीरों को तोड़ने के लिये या लोगों को गरीबी के दायरे से बाहर रखने के लिये दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है, परंतु उस पर पैसा खर्च नहीं किया जा रहा है। जो पैसा बुनियादी सुविधाओं के सृजन जैसे-बिजली, पानी, स्कूल, सड़क पर निवेश किया जाना चाहिये, वह पैसा मुफ्तखोरी पर खर्च हो रहा है। जो देश और समाज के लिये दीर्घकालिक परिपेक्ष्य में हानिकारक है। किसानों को मुफ्त बिजली, पानी देने की आदत बहुत पहले से डाली गई और उसका परिणाम यह रहा कि अब जब उनसे इन सेवाओं के लिये पैसे मांगे जाते हैं, तो इसे जुल्म की तरह से लेते हैं, गरीबी का वास्ता देते हैं। किसानों को मुफ्त बिजली, पानी देने पर सरकार इतना पैसा खर्च करती है कि बुनियादी सुविधाओं को सही तरह से उपलब्ध कराने के लिये पैसा नहीं बचता। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज तक भारत के आम लोगों को पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं हो पा रहा है और लोग अपने घरों में एक्वागार्ड या अन्य उपकरण लगाने पर मजबूर हुए हैं।

जब लोगों को वस्तुएं, सुविधाएं और सेवाएं निःशुल्क मिलने लगती हैं, तब एक प्रकार से सरकार पर उनकी निर्भरता और आश्रयता बढ़ती जाती है और वह काम करने से पीछे हटने लगते हैं। लोगों के मन में यह भाव बैठ जाता है कि सरकार हमको निःशुल्क आवश्यक और बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराती रहेगी क्योंकि यह उसकी राजनीतिक मजबूरी है। इस सोच के कारण वह अपनी क्षमता का उपयोग नहीं करते हैं और परिश्रम करना बंद कर देते हैं।

रेवड़ी कल्चर के राजनीतिक आयाम

वस्तुतः रेवड़ी कल्चर के केवल सामाजिक एवं आर्थिक आयाम ही नहीं है बल्कि इसके राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। देश का राजनीतिक वर्ग और राजनीतिक दल फ्री रेवड़ी कल्चर को सत्ता प्राप्ति और सत्ता में बने रहने के एक माध्यम के रूप में देखते रहते हैं। इसके माध्यम से सत्ता प्राप्ति सुनिश्चित करना चाहते हैं, इसलिये इसे एक स्थायी उपकरण के रूप में प्रयोग में लाते हैं। राजनीतिक वर्ग और राजनीतिक दलों को केवल अपना तत्कालिक हित दिखाई पड़ता ह और उनके द्वारा अर्थव्यवस्था और समाज के दीर्घकालीन हितों को नजरअंदाज करते हुए फ्री रेवड़ी कल्चर को बढ़ावा दिया जाता है। फ्री रेवड़ी कल्चर के राजनीतिक विमर्श में आर्थिक पहलुओं या सिद्धांतों की कमी पाई जाती है।

अर्थशास्त्रियों द्वारा सार्वजनिक वस्तुएं बनाम निजी वस्तुएं, मेरिट गुड्स बनाम गैर मेरिट गुड्स जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उल्लेखनीय है कि मेरिट गुड्स में सकारात्मक बाध्यताएं होती हैं। अन्य शब्दों में भी कहा जा सकता है कि मेरिट गुड्स प्रभावित व्यक्ति के कल्याण के साथ सामाजिक हित में बेहतरीन परिणाम लाती हैं। जबकि गैर मेरिट गुड्स से नकारात्मक बाध्यताएं उत्पन्न होती हैं। इस पर व्यय दूसरों से वसूला जाता है, जिससे लाभार्थी परिवार के आय सृजन में वृद्धि होती है। ऐसी स्थिति में यह निर्धारित करना या यह तय करना जटिल स्थिति है कि कौन सा फ्री कल्चर अच्छा और जरूरी है। इसके साथ-साथ कौन से उपाय गैर जरूरी तथा उपयुक्त नहीं है? यह कौन तय करेगा या इसका निर्धारण कौन करेगा?

इसमें कोई संदेह नहीं है कि कल्याणकारी राज्य में समाज के कमजोर एवं उपेक्षित वर्गों और निर्धनतम वर्ग के लोगों के हितों की रक्षा करना, उनके जीवन को बेहतर बनाना राज्य का दायित्व है। इसका आशय यह नहीं है कि हमेशा लोगों को निःशुल्क वस्तुएं, सुविधाएं और सेवाएं उपलब्ध करायी जाएं। सरकार इस पर व्यय धन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में या दृश्य या अदृश्य रूप में करदाताओं से ही वसूलती है। इसके साथ-साथ जरूरत पड़ने पर ऋण का भी सहारा लेती है, जिसका बोझ अप्रत्यक्ष रूप में सभी लोगों पर ही पड़ता है। यह भी ज्ञातव्य है कि सरकार घाटे की पूर्ति के लिये समाज के अन्य वर्गों पर अंतहीन बोझ नहीं लगा सकती है।

फ्री रेवड़ी कल्चर संबंधी मुद्दा लोकतांत्रिक पूंजीवाद और नव उदारवाद की परिधि में बाजार की भूमिका स्वीकार करती है। उपयोगितावाद तथा समतावादी दृष्टिकोण अधिकतम लोगों के अधिकतम कल्याण और संतुष्टि के तर्क का आधार बनता है।

फ्री रेवड़ी कल्चर की अवधारणा बेंथम के अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख और जे.एस.मील के उपयोगितावाद पर आधारित है। वही क्षमता दृष्टिकोण में विकास को लोगों की स्वतंत्रता का विस्तार कर उनकी क्षमताओं को बढ़ाने की प्रक्रिया के तौर पर देखा जाता है। इन सभी सामाजिक, आर्थिक विचारों में जनकल्याण एवं समाज कल्याण में राज्य की भूमिका को लेकर संशय नहीं है। परंतु मूल मुद्दा यह है कि किसे मुनाफाखोरी माना जाए और किसे विकास व्यय। यह अति संशय और अनिर्णय की स्थिति है।

भारत में अनेक राज्य सरकारें फ्री रेवड़ी कल्चर को अपना रही है। उनके द्वारा अपने राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बिना किसी सुनियोजित कार्यक्रम के फ्री रेवड़ी कल्चर को अपनाया जा रहा है। जिसके कारण राज्य की आर्थिक स्थिति पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। राज्यों के राजकोषीय घाटे में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके बावजूद कुछ राज्य सरकारें इसको जारी रखे हुए है। वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर रही हैं, बल्कि केवल लोकप्रिय एवं लोक लुभावन कदमों को आत्मसात कर रही हैं।

वर्ष 2020-21 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा राजकोषीय जोखिम रिपोर्ट जारी की गई थी, जिसमें विभिन्न राज्यों की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया था। इस रिपोर्ट में राज्यों के आय, व्यय और

निसंदेह निःशुल्क सुविधाएं और वस्तुएं मिलने से लोगों को राहत मिलती हैं, उन पर आर्थिक बोझ कम होता है, जिससे उन्हें अपने जीवन स्तर में सुधार करने का अवसर मिलता है। निःशुल्क सुविधाएं और सेवाएं मिलने से लोगों की क्षमता में भी वृद्धि होती है। लोग स्वयं को उत्पादकीय गतिविधियों में नियोजित करने लगते हैं, जिसका समाज और अर्थव्यवस्था को दीर्घकालीन परिपेक्ष्य में सकारात्मक लाभ और लाभांश प्राप्त होता है, परंतु यह बहुत कम होता है।

ऋण संबंधी स्थितियों की जानकारी दी गई थी। पंजाब के संदर्भ में कहा गया था कि पंजाब की ऋण देयता उनके राज्य सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 54 प्रतिशत के बराबर है, जो अति चिंता का विषय है। राजस्थान का कुल ऋण उसके राज्य सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 40 प्रतिशत, बिहार का लगभग 39 प्रतिशत, केरल का 37 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश का 35 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल का लगभग 35 प्रतिशत, झारखंड का 34 प्रतिशत, आंध्र प्रदेश का 32.5 प्रतिशत, मध्य प्रदेश का 31.3 प्रतिशत तथा हरियाणा का 29.4 प्रतिशत था। इन राज्यों का व्यय भारत के सभी राज्य सरकारों द्वारा कुल व्यय का लगभग आधा हिस्सा है। यह राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं ऋण प्रबंधन अधिनियम 2003 का उल्ल्लंघन है।

रेवड़ी कल्चर और विश्वास

फ्री रेवड़ी कल्चर और लोक लुभावन घोषणाएं तभी काम करती हैं जब जनता को यह विश्वास और भरोसा होता है कि ऐसी घोषणाएं करने वाला दल चुनाव जीतने में समर्थ होगा। आम आदमी पार्टी ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में लोक लुभावन घोषणा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। परंतु उसके जीतने की संभावना न होने के कारण उसकी लोक लुभावन घोषणाओं पर जनता ने कोई ध्यान नहीं दिया। आम आदमी पार्टी को बुरी तरह से पराजित होना पड़ा। वहीं 2022 के पंजाब के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी के जीतने की संभावना थी। इसलिये वहां उसके ओर से की गई लोक लुभावन घोषणाओं ने अपना असर दिखाया और वह बड़े बहुमत से सत्ता में आ गई। यह भी सत्य है कि केवल फ्री रेवड़ी कल्चर से सत्ता प्राप्त नहीं की जा सकती। फ्री रेवड़ी कल्चर की भी चुनावी संग्राम में एक सीमित भूमिका होती है। वर्तमान परिदृश्य में यह मतदाताओं को प्रभावित करने का काम कर रहा है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव और फ्री रेवड़ी कल्चर

हाल में संपन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में फ्री रेवड़ी कल्चर के संदर्भ में बढ़-चढ़कर वादे किये गये। इन सभी पांच राज्यों का फ्री रेवड़ी कल्चर के संदर्भ में क्रमवार विश्लेषण इस प्रकार हैः

- राजस्थान की अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने काफी पहले से ही सरकारी खजाने का मुंह खोल दिया था। चुनाव के समय राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मतदाताओं को सात गारंटियां भी दी थीं। इनमें गृहलक्ष्मी योजना के अंतर्गत परिवार की मुखिया महिला को वार्षिक 10 हजार की राशि, 1 करोड़ परिवारों को 500 रुपये में एलपीजी सिलेंडर, सरकारी कॉलेज के विद्यार्थियों को लैपटॉप या टैबलेट, प्राकृतिक आपदा से हुई मृत्यु में प्रत्येक परिवार को 15 लाख रुपये का बीमा, अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा और चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा का दायरा 25 लाख से 50 लाख रुपया करना सम्मिलित था। अशोक गहलोत के इन लोक लुभावन घोषणाओं को निष्प्रभावी बनाने के लिये भारतीय जनता पार्टी ने भी शतरंज की चाल चली और उसने भी फ्री रेवड़ी कल्चर की पॉलिसी को अपनाया। भारतीय जनता पार्टी ने गरीब परिवार की लड़कियों को मुफ्त शिक्षा, छात्राओं को स्कूटी, साढ़े चार सौ रुपये में एलपीजी सिलेंडर, किसानों को 12 हजार रुपये की वार्षिक मदद, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को बारह सौ रुपये का मासिक परिवहन भत्ता, दिव्यागजनों और वरिष्ठ नागरिकों को 15 सौ रुपये की मासिक पेंशन जैसे वादे किये।
- मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान सरकार के लगभग दो दशक से सत्ता में होने के कारण मतदाताओं में नाराजगी होना स्वभाविक था। जिसे देखते हुए

शिवराज सिंह चौहान सरकार ने लाडली बहन योजना शुरू की। शुरू में इस योजना के अन्तर्गत 1000 रुपये महीना महिलाओं को दिया जाने लगा, परंतु जब कांग्रेस ने इसे सत्ता में आने पर 15 सौ रुपये करने वादा किया तो शिवराज सरकार ने इसे बढ़ाकर 1250 रुपये प्रतिमाह देना शुरू कर दिया और इसे भविष्य में 3 हजार रुपये प्रति माह करने का वादा किया। मध्य प्रदेश में मतदाताओं को लुभाने के लिये भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस ने एक प्रकार से प्रतिस्पर्धा शुरू कर दी। कांग्रेस ने पांच सौ रुपये में एलपीजी सिलेंडर उपलब्ध कराने का वादा किया तो शिवराज सिंह सरकार ने चार सौ पचास रुपये में सिलेंडर उपलब्ध कराने का वादा कर दिया। कांग्रेस ने 100 यूनिट मुफ्त बिजली और उसके बाद के 100 यूनिट आधे दाम में उपलब्ध कराने का और छात्रों को मासिक भत्ता देने का भी वादा किया। परंतु मध्य प्रदेश की जनता ने कांग्रेस के वादों पर विश्वास न करते हुए भारतीय जनता पार्टी के वादे पर विश्वास किया।

जहां तक तेलंगाना का प्रश्न है, तो तेलंगाना पर लगभग 3 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है। पिछले 10 वर्षों में तेलंगाना राज्य पर कर्ज 300 प्रतिशत बढ़ा है, परंतु इसके बावजूद मतदाताओं को लुभाने के लिये लोक लुभावन वादे किये गये। वहां की सत्ताधारी दल भारत राष्ट्र समिति ने प्रत्येक शादी में सरकारी शगुन के तौर पर 1 लाख रुपये देने की घोषणा की और अलग-अलग समुदाय के हिसाब से इसका नाम भी कल्याण लक्ष्मी और शादी मुबारक रखा गया। इसके अतिरिक्त 15 लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा, बीड़ी बनाने वालों को 5 हजार रुपये का मानदेय और गरीब घरों की महिलाओं को 3 हजार रुपये के अतिरिक्त किसानों के लिये कर्ज माफी का वादा किया गया। भारत राष्ट्र समिति की घोषणाओं को निष्प्रभावी बनाने के लिये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भी लोक लुभावना घोषणा की गई। कांग्रेस ने कर्नाटक के तर्ज पर यहां पर भी कुछ गारंटी प्रदान करने की घोषणा की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत राष्ट्र समिति के सरकारी शगुन और शादी मुबारक को निष्प्रभावी बनाने के लिये अल्पसंख्यक समुदाय की दुल्हन को 1.6 लाख रुपये और हिंदू दुल्हन को 1 लाख रुपये देने के साथ ही 1 तोला सोना देने की घोषणा की। यही नहीं, कांग्रेस ने 18 साल से अधिक उम्र की छात्राओं के लिये इलेक्ट्रिकल स्कूटी, ऑटो रिक्शा चालकों

गौरतलब है कि फ्री रेवड़ी कल्चर की नीति पहले भी अपनाई जाती रही है। अरविंद केजरीवाल के भारतीय राजनीति में पदार्पण और दिल्ली में सत्ता में आने के बाद रेवड़ी कल्चर को एक नया आयाम मिला। इसके बाद प्रत्येक राज्य द्वारा किसी न किसी रूप में इसको अपनाया जाने लगा। राज्य अपनी आर्थिक स्थिति का ध्यान किये बिना इसको अपना रहे हैं और केन्द्र से वित्तीय समर्थन की अपेक्षा कर रहे हैं। यह किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।

को 12 हजार रुपये वार्षिक सहायता, विधवाओं के लिये 6 हजार रुपये मासिक पेंशन और किसानों को 3 लाख तक का ब्याज मुक्त ऋण देने का वादा किया।

- लोक लुभावना वादों के मामले में छत्तीसगढ़ में अपेक्षाकृत सभी राजनीतिक दलों ने अलग संयमित दृष्टिकोण अपनाया। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने युवाओं को 25 सौ रुपये का मासिक भत्ता और लड़कियों की शादी के दौरान 25 हजार से 50 हजार रुपये का अनुदान देने का वादा किया, तो वहीं भारतीय जनता पार्टी ने धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि करने का वादा किया।
- हाल ही में संपन्न चुनावी राज्यों में मिजोरम इकलौता राज्य है, जहां फ्री रेवड़ी कल्चर और लोक लुभावना वादों की कोई चर्चा नहीं की गई।

गौरतलब है कि फ्री रेवड़ी कल्चर की नीति पहले भी अपनाई जाती रही है। अरविंद केजरीवाल के भारतीय राजनीति में पदार्पण और दिल्ली में सत्ता में आने के बाद रेवड़ी कल्चर को एक नया आयाम मिला। इसके बाद प्रत्येक राज्य द्वारा किसी न किसी रूप में इसको अपनाया जाने लगा। राज्य अपनी आर्थिक स्थिति का ध्यान किये बिना इसको अपना रहे हैं और केन्द्र से वित्तीय समर्थन की अपेक्षा कर रहे हैं। यह किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। यदि राज्यों की आर्थिक स्थिति अच्छी है, और वह अपने बलबूते दीर्घकालीन आर्थिक और सामाजिक हितों को दृष्टिगत रखते हुए ऐसा करने में सक्षम हैं, तो किसी को एतराज नहीं है। परंतु अर्थव्यवस्था को विनाश के गर्भ में धकेल कर इस प्रकार की नीति अपनाते हैं तो यह उपयुक्त नहीं है।

नि:शुल्क सुविधाएं प्रदान करना हमेशा उपयुक्त नहीं होता है। यह लोगों को भ्रष्ट और अक्षम बनाने का एक माध्यम है। इससे मुफ्तखोरी को बढ़ावा मिलता है, और मतदाताओं को प्रलोभन दिया जाता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि यह मतदाताओं को एक प्रकार की रिश्वत है।

आम लोगों को भी इसपर विचार-विमर्श करना होगा कि उसे भी अपवाद को छोड़कर इस प्रकार की सुविधाओं को लेने से अपने आपको रोकना होगा। यह सुविधा अपवाद रूप में केवल उन्हीं लोगों को मिलनी चाहिये जिनके पास कोई विकल्प नहीं है। परंतु उनको भी आजीवन या सतत रूप में नहीं मिलनी चाहिये, बल्कि एक निश्चित अवधि तक मिलनी चाहिये।

फ्री रेवड़ी कल्चर के संदर्भ में राजनीतिक विश्लेषकों, अर्थशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों को पूर्वाग्रह से उपर उठकर निष्पक्षता के साथ इस पर चिंतन मनन करना होगा। इस संदर्भ में सरकार को स्पष्टता के साथ अपने विचारों और विकल्पों से लोगों को अवगत कराना होगा।

समाज से भी अपेक्षा की जाती है कि वह संकीर्ण भावना का परित्याग करके समाज और राष्ट्र हित में सुविधा का लाभ भी उठाए और समय के अनुसार उसका परित्याग भी करे। अन्यथा विनाश के भंवर में फंसने से कोई रोक नहीं सकता।

हम भारतीय जन्मजात आशावादी होते हैं। इसलिये हमारी अपेक्षा सरकार और राजनीतिक दलों से भी है कि अभी समग्रता को दृष्टिगत रखते हुए इस पर विचार विमर्श करेंगे और उपयुक्त कदम उठाएंगे।

प्रतीक्षा में राष्ट्रहित शुभचिंतकों का समूह...।

(लेखक आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक मामलों के जानकार है एवं इनके द्वारा लिखित कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है।)

समाधान है

रिश्तों में आजादी...

अमित तिवारी

आजादी बड़ा अच्छा शब्द है। इसे सुनते ही व्यक्ति कुछ ऐसे भावों से भर जाता है, मानो उसे जीवन में सब कुछ प्राप्त करने की राह दिख गई हो।

हर व्यक्ति जीवन में आजादी चाहता है। वह अपने हिसाब से जीवन जीना चाहता है।

आजाद परिंदे जैसी जिंदगी को लेकर न जाने कितने किस्से लिखे और गढ़े गए हैं। न जाने कितनी फिल्में बनी हैं। हम पर किसी की बंदिश न हो, हमें किसी की फिक्र न करनी पड़े, हमें किसी के हिसाब से न चलना पड़े, हमें किसी को जवाब न देना हो और ऐसी ही न जाने कितनी इच्छाएं होती हैं आजाद परिंदे की तरह जीने की चाह रखने वालों में।

वैसे तो इन बातों में ऐसा कुछ गलत नहीं लग रहा है। अच्छा ही है सब। व्यक्ति आजादी से जीता है तो नए विचार उसके मन में आते हैं। वह कुछ नया रचता है। वह इतिहास बनाता है।

जब व्यक्ति सबसे मुक्त होता है, तो उसे बोधत्व की प्राप्ति होती है। इस संबंध में भगवान बुद्ध से लेकर ऐसे कई उदाहरण भी दिए जा सकते हैं, जिन्होंने संबंधों से मुक्त होकर जीवन को नई राह दी। न केवल अपने जीवन को, बल्कि समाज को भी नई दिशा दी।

लेकिन,

क्या संबंधों में आजादी या संबंधों से आजादी वास्तव में इतनी सहज और अच्छी बात है?

क्या जीवन में कुछ बेहतर करने के लिए संबंधों से मुक्त होना आवश्यक है?

क्या संबंध वास्तव में बंधन होते हैं?

एक शब्द में उत्तर है, 'नहीं' !!!

चौंकिए मत कि लेख के प्रारंभ से ही आजादी और आजाद परिंदे जैसी जिंदगी के लिए भूमिका बनाते-बनाते हमने इसे खारिज क्यों कर दिया।

बिन डोर की पतंग...

इस बात को समझाने का सबसे सहज उदाहरण है पतंग। एक पतंग ऊंची उड़ती है, लेकिन कहीं न कहीं उससे बंधी डोर उसे रोके भी रहती है। प्रश्न यह है कि वह डोर पतंग के उड़ने का कारण है या उसे रोके रखने का माध्यम? इसका उत्तर भी हम सब जानते हैं। असल में वह डोर बंधी है, तभी वह पतंग ऊंची उड़ने में सक्षम है। जिस पल उसे अपनी डोर का बंधन मुश्किल लगने लगेगा और वह उससे आजादी चाहेगी, ठीक अगले ही पल वह कटी पतंग की तरह कहीं गिर पड़ेगी। यही जीवन है। जिन संबंधों की डोर हमें अपनी उड़ान में बाधक लगती है, असल में हमारी उड़ान उनके ही कारण है। जिस दिन डोर कटेगी, व्यक्ति कटी पतंग की तरह कहीं धूल खाता मिलेगा।

तब फिर बुद्ध के उदाहरण और किस्से-कहानियों का क्या अर्थ है?

असल में पतंग का उदाहरण सुनते ही हम सबके मन में भगवान बुद्ध और उन जैसे अन्य उदाहरण भी आने लगते हैं, जहां संबंध से मुक्त होकर व्यक्ति ने समाज की दिशा बदल दी। आजाद परिंदों वाले किस्से हमें याद आने लगते हैं।

वस्तुतः ये सब उदाहरण एकतरफा और गलत तरीके से प्रस्तुत किए जाते हैं।

भगवान बुद्ध किसी संबंध से आजादी नहीं चाहते थे। उनके जीवन की दिशा वैराग्य की थी। बोधत्व की प्राप्ति के बाद वह समाज से मुक्त होकर कहीं नहीं गए। समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझा और समाज को नई दिशा दी। इसलिए बुद्ध का उदाहरण कम से कम रिश्तों में कथित आजादी चाहने वालों के मामले में नहीं दिया जा सकता है।

रही बात परिंदों की, तो किसने ये झूठ रचा है कि परिंदे आजाद होते हैं? परिंदे भी संबंधों से हमारी ही तरह बंधे होते हैं। उनमें भी ऊंची उड़ान के बाद अपने घोंसले तक आने की चाहत होती है। ऐसे में आजाद परिंदों जैसे शब्द जाल के माध्यम से रिश्तों की जिम्मेदारियों से भागना गलत है।

अब बात आती है कि रिश्तों में आजादी है क्या?

दरअसल रिश्तों में आजादी के अनर्गल से विचार के पीछे पश्चिम का प्रभाव है। वहां के बहुत से देशों में बच्चा वयस्क होते ही माता-पिता के बंधन से मुक्त हो जाता है। अपने खर्चे चलाने और जीवन की दिशा निर्धारित करने के लिए वह स्वतंत्र हो जाता है। इन्हीं किस्सों ने यहां भी रिश्तों में

आजादी खोजने के विचार को हवा दी है।

हमें यह समझना होगा कि रिश्ते बंधन नहीं होते हैं। रिश्ते आपकी सफलता की यात्रा में बाधक नहीं अपितु सहायक होते हैं। आप जीवन में कुछ बनना चाहते हैं, तो कहीं न कहीं उसकी प्रेरणा रिश्तों से ही मिलती है। आप अपने माता-पिता व परिवार के लिए कुछ अच्छा करना चाहते हैं। आप अपने बच्चों के लिए कुछ अच्छा चाहते हैं। यही चाहत आपको सफलता की राह पर लेकर जाती है।

आजाद होकर जीवन जीने जैसा कुछ नहीं होता है।

संबंधों से आजाद रहकर जीने जैसा कुछ भी संभव नहीं है। जब कोई रिश्तों से आजाद रहने की बात कहे, तो उससे यह जरूरी पूछिए कि रिश्तों से विहीन होकर वह कैसे जीना चाहता है? क्या उसे कोई रिश्ता नहीं चाहिए? और अगर उसे कुछ चुनिंदा रिश्तों की चाहत है, इसका अर्थ है कि वह बस रिश्तों के आजादी के नाम पर बेकार ही गाल बजाता है। हमें यह रिश्ता चाहिए, वह नहीं चाहिए, इस तरह से रिश्तों से आजादी तो नहीं मिल सकती है। हमें मुसीबत में काम आने वाला दोस्त तो चाहिए, लेकिन हमें ऐसा कोई नहीं चाहिए, जो हमसे यह उम्मीद रखे कि हम उसकी मुसीबत में काम आएंगे। हमें ऐसे माता-पिता की चाहत तो है कि जो बिरला और अंबानी की तरह हमारे लिए संपत्ति छोड़ जाएं, लेकिन हम ऐसा पुत्र नहीं बनना चाहते, जो माता-पिता की सेवा करे। हमें ऐसी पत्नी या ऐसा पति तो चाहिए जो हमें हर मोड़ पर समझे और हमारे साथ खड़ा रहे, लेकिन हम स्वयं सामने वाले के लिए ऐसा जीवनसाथी बनने का प्रयास नहीं करते हैं।

असल में इस कथित आजादी का बिगुल बजाने वाले निरे स्वार्थी होते हैं। वे रिश्तों से आजादी नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों से भागना चाहते हैं। उनकी आजादी का पूरा प्रलाप बस जिम्मेदारी से भागने के लिए होता है। हमें पुत्र के रूप में माता-पिता के प्रति जिम्मेदारी न निभानी पड़े। हमें भाई के रूप में भाई या बहन के लिए जिम्मेदारी न निभानी पड़े। हमें पति या पत्नी के रूप में कोई जिम्मेदारी न निभानी पड़े। हमें शिष्य होकर गुरु के प्रति कोई जिम्मेदारी न निभानी पड़े। हमें समाज के प्रति कोई जिम्मेदारी न निभानी पड़े।

इन सब जिम्मेदारियों से भागने और स्वयं को सही सिद्ध करने के प्रपंच का नाम है आजादी से जिंदगी जीना।

हमें लिव-इन इसलिए नहीं पसंद है कि यह किसी को जीवन जीने का अधिकार देता है, बल्कि हमें लिव-इन इसलिए चाहिए कि यह जिम्मेदारी से बचना सिखाता है। जब तक साथ सही लगेगा, चलाएंगे। जैसे ही जिम्मेदारी निभाने की बारी आएगी, किनारे हो जाएंगे, यह कहते हुए कि हमें बंधकर जीना अच्छा नहीं लगता।

पति-पत्नी के मजबूत संबंधों में भी इसी आजादी का घुन लग गया है। जीवनसाथी से हमें किस बात की आजादी चाहिए होती है? यह भाव और जिम्मेदारियों का संबंध है। यह एक-दूसरे के कष्ट को समझने का संबंध है। यह एक-दूसरे से प्रेम प्रदर्शित करने का संबंध है। लेकिन हमारा अहं आड़े आ जाता है। यह संबंध एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ के लिए नहीं बना है। यह एक-दूसरे का हाथ थामकर आगे बढ़ने का संबंध है। यह सम्मान देने और सम्मान पाने का संबंध है।

वास्तव में जीवन में हर संबंध इन्हीं कुछ आधार पर चलता है।

विश्वास हर संबंध की सबसे बड़ी पूंजी है। विश्वास रखिए और विश्वास बनाए रखिए। सम्मान में कभी कमी न आने दीजिए। किसी भी संबंध की गरिमा बनाए रखना हर किसी की जिम्मेदारी है। इसमें न अभिमान को जगह मिलनी चाहिए और न ही झूठ को।

संबंधों से आजादी के नाम पर जीवन को कटी पतंग बना देने की गलती से बचना चाहिए। हो सकता है कि डोर से मुक्त होने के बाद कुछ समय पतंग थोड़ा और ऊंची जाए और मनचाहे तरीके से मनचाही दिशा में उड़े, लेकिन अंत में उसे कहीं गिरकर धूल ही खाना होता है। उस धूल से भी उसे कोई उठाएगा, तो ऊंचा उड़ाने के लिए फिर किसी न किसी डोर के ही साथ की जरूरत पड़ेगी।

ड्रिफ्ट को आईसीएफटी-यूनेस्को गांधी पदक

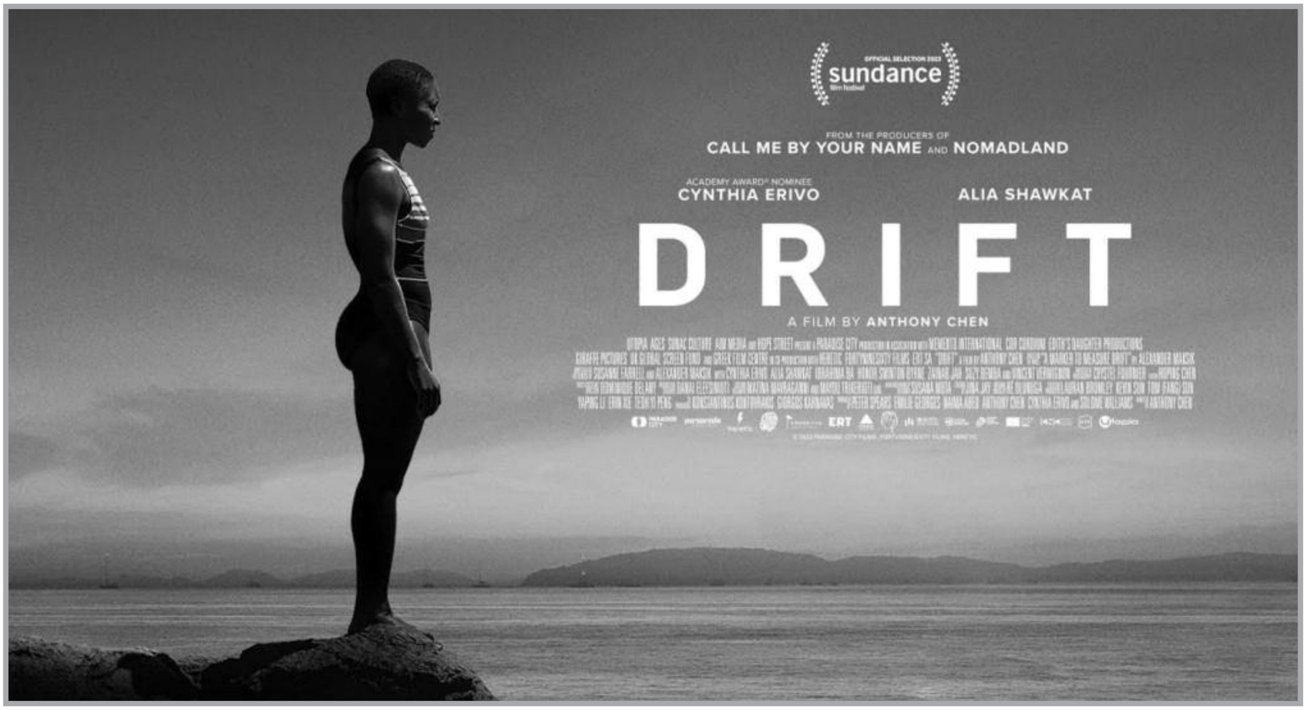

मीमांसा डेस्क

54वें भारत अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में एंथनी चेन द्वारा निर्देशित फ्रें च, ब्रिटिश और ग्रीक सह-निर्माण वाली फिल्म ड्रिफ्ट को प्रतिष्ठित आईसीएफटी-यूनेस्को गांधी पदक प्राप्त हुआ। इस फिल्म में एक अप्रवासी महिला का भावनात्मक चित्रण किया गया है, जो मनुष्यता के पागलपन के बीच दर्दनाक और भयानक वास्तविकता को झेलने के लिये अभिशप्त प्रतीत होती है।

ड्रिफ्ट में सिंथिया एरिवो द्वारा अभिनीत मुख्य पात्र 'जैकलीन' एक युवा शरणार्थी है, जो अकेले और विपन्नता के बीच एक ग्रीक द्वीप पर पहुंचती है। द्वीप पर वह जीवित रहने की कोशिश करती है, फिर अपने अतीत से निपटने की कशमकश करती है। अपनी शक्ति इकट्ठा करते हुए, वह आलिया शौकत द्वारा अभिनीत एक बेघर टूर गाइड के साथ दोस्ती करती है। दोनों एक-साथ आगे बढ़ने के लिए एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। फिल्म दर्शाती है कि कैसे जीवन की अनिश्चितताओं के बीच अप्रत्याशित बंधन बन सकते हैं। आईसीएफटी-यूनेस्को गांधी मेडल के लिए इस दिल को छू लेने वाली फिल्म का चयन करते हुए ज्यूरी ने कहा कि यह आशा और हर स्थिति का सामना करने की शक्ति को उजागर करती है। ड्रिफ्ट का वर्ल्ड प्रीमियर 22 जनवरी 2023 को सनडांस फिल्म फ़ेस्टिवल में हुआ था। यह फिल्म अलेक्जेंडर मक्सिक के उपन्यास 'ए मार्कर टू मीजर ड्रिफ्ट' पर आधारित है। सुज़ैन फैरेल के साथ अलेक्जेंडर मक्सिक ने फिल्म की सह-पटकथा लिखी। इस वर्ष भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रतिष्ठित आईसीएफटी-यूनेस्को गांधी पदक के लिए दुनिया भर से दस फिल्मों के बीच प्रतिस्पर्धा थी।

आईसीएफटी पेरिस और यूनेस्को द्वारा स्थापित, गांधी मेडल आईएफएफआई में एक ऐसी फिल्म को दिया जाने वाला वार्षिक सम्मान है, जो महात्मा गांधी के शांति, अहिंसा, करुणा और सार्वभौमिक भाईचारे के दृष्टिकोण को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करती है। वर्ष 2015 में 46वें आईएफएफआई में अपनी शुरुआत के बाद से इस पुरस्कार ने इन स्थायी मूल्यों को अपनाने वाली फिल्मों का मान बढ़ाया है।

खादी की रिकॉर्ड तोड़ मांग

बी.के. झा

बदलते वक्त और फैशन के साथ एक बार फिर खादी ने लोगों के दिलों में अपनी एक खास जगह बनानी शुरू कर दी है। इसका प्रमाण 42वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में मिला। दरअसल, खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी), सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार ने 14 से 27 नवंबर, 2023 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 42वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (आईआईटीएफ)-2023 में हिस्सा लिया। 14 दिनों तक चले इस अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में हॉल नंबर-3 में लगे 'खादी पवेलियन' में खादी प्रेमियों ने जमकर खरीदारी की। आयोग के इतिहास में पहली बार आईआईटीएफ में खादी और ग्रामोद्योगी उत्पादों की बिक्री का आंकड़ा 15 करोड़ रूपये को पार कर गया। केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार के अनुसार आईआईटीएफ के खादी इंडिया पवेलियन में इस बार दिल्लीवालों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' अभियान का व्यापक असर दिखा। दिल्लीवालों ने 15.03 करोड़ रुपये की खादी और ग्रामोद्योगी उत्पादों की खरीद की। 2022 में आयोजित आईआईटीएफ में खादी और ग्रामोद्योगी उत्पादों की बिक्री 12.06 करोड़ रुपये थी, जो इस वर्ष 25 प्रतिशत वृद्धि के साथ 15.03 करोड़ रुपये पहुंच गई। उन्होंने आगे कहा कि 15.03 करोड़ रुपये की ऐतिहासिक बिक्री इस बात का प्रमाण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'नये भारत की नयी खादी' आत्मनिर्भर भारत अभियान की अगुवा बन चुकी है। इंडिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन द्वारा खादी पवेलियन को विशेष प्रशंसा पदक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

27 नवंबर को खादी इंडिया पवेलियन में आयोजित समापन कार्यक्रम में बिक्री के आधार पर प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने सम्मानित किया। प्रथम पुरस्कार कर्नाटक की टीएनआर सिल्क खादी को दिया गया। इस स्टॉल पर 4,408,870 रुपये के खादी उत्पाद बिके। द्वितीय स्थान पर कर्नाटक की नाजनीन सिल्क खादी इंडस्ट्रीज रही, जिसने 3,076,600 रुपये के खादी और ग्रामोद्योगी उत्पाद की बिक्री की। 2,253,570 रुपये की बिक्री के साथ तृतीय स्थान पर भी कर्नाटक की संस्था शिरीन सिल्क खादी ग्रामोद्योग संघ रही। इसके अलावा बिक्री के आधार पर 10 स्टॉल्स को सांत्वना पुरस्कार भी दिये गए। देशभर से खादी इंडिया पवेलियन में भाग लेने आये 214 खादी और ग्रामोद्योग संस्था, पीएमईजीपी और स्फूर्ति यूनिट को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि खादी इंडिया पवेलियन माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विजन 'आत्मनिर्भर भारत' के अनुरूप तैयार किया गया था। खादी संस्थानों, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के तहत स्थापित इकाइयों और देश भर से स्फूर्ति क्लस्टर के तहत स्थापित इकाइयों के माध्यम से खादी कारीगरों की भागीदारी के लिए 214 स्टालों की स्थापना की गई थी, जिसमें बेहतरीन दस्तकारी खादी और ग्रामोद्योग उत्पाद का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने बताया कि खादी पवेलियन में स्थापित देशी चरखा, विद्युत चालित कुम्हारी चॉक, कच्ची घानी तेल निकालने की प्रक्रिया, मंदिर में पूजा के लिए उपयोग किए हुए पुष्पों को री-साइकल कर बनाई गई अगरबत्ती- धूपबत्ती बनाने के सजीव प्रदर्शन को दर्शकों ने खूब पसंद किया।

केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि खादी इंडिया पवेलियन में लगे 214 स्टॉलों पर भारतवर्ष के अलग-अलग क्षेत्रों के कारीगरों द्वारा निर्मित उत्पादों द्वारा भारत की समृद्ध विरासत, शिल्प कौशल और हस्त कला को प्रदर्शित किया गया था। 40% से अधिक स्टॉल 'खादी' निर्माण से जुड़ी संस्थाओं को आवंटित थे, शेष स्टॉल में ग्रामोद्योग, पीएमईजीपी और स्फूर्ति की इकाइयों के उत्पादों को प्रदर्शित किया गया था। उन्होंने आगे बताया कि 15.03 करोड़ रुपये की ऐतिहासिक बिक्री ने ग्रामीण भारत में रहनेवाले हमारे कारीगरों के हाथों को नयी शक्ति दी है।

***

'प्रिजर्व द यूट्रस' एक जरूरी पहल

मीमांसा डेस्क

यूट्रस यानि गर्भाशय, महिलाओं का सबसे जरूरी प्रजनन अंग है, जिसे कई बीमारियों के कारण हटा दिया जाता है। यूट्रस हटाने वाले ऑपरेशन को हिस्टेरेक्टॉमी कहते हैं। इसके तहत फैलोपियन ट्यूब, ओवरी, सर्विक्स एवं अन्य प्रजनन पार्ट भी शामिल है।

यूट्रस निकलने से महिलाओं की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। इसके चलते उन्हें कम उम्र में ही मेनोपॉज और ऑस्टियोपोरोसिस जैसी समस्याएं हो जाती हैं। समय के साथ भारत में कम उम्र की महिलाओं में भी यूट्रस रीमूवल के केसों में बढ़ोतरी देखी गई है, जो एक चिंता का विषय है। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना ने सितंबर, 2018 से अप्रैल, 2019 के बीच 24,00,981 हेल्थ केयर पैकेज दिए थे जिनमें से 21,896 हिस्टेरेक्टॉमी के लिए थे। ऐसे में महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये 'प्रिजर्व द यूट्रस' जैसी पहल और जागरूकता जरूरी है। देश में कम उम्र में हिस्टेरेक्टॉमी (गर्भाशय निकलवाने) के बढ़ते मामले को देखते हुए अप्रैल 2022 में देश में 'प्रिजर्व द यूट्रस' अभियान की शुरूआत की गई थी। इसे भारत में बायर के फार्मास्यूटिकल्स डिवीजन, इंटिग्रेटेड हेल्थ एंड वेलबीइंग (आईएचडब्ल्यू) काउंसिल और फ़ेडरेशन ऑफ ऑब्स्टेट्रिक एंड गायनेकोलॉजिकल सोसाइटीज ऑफ इंडिया (एफओजीएसआई) ने शुरू किया था। इसे ऐसे समय प्रस्तुत किया गया, जब देश में महिलाओं में समय से पहले हिस्टेरेक्टॉमी के बढ़ते मामले मीडिया में सामने आ रहे थे।

हाल ही में 30 नवंबर 2023 को इस संबंध में दिल्ली में 'प्रिजर्व द यूट्रस' राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे आयोजन में जाने-माने विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंचे कि देश में गैर-जरूरी हिस्टेरेक्टोमी (गर्भाशय निकलवाने) के बढ़ते मामलों को कम करने के लिए सभी संबंधित पक्षों को मिल-जुलकर जागरूकता के प्रयास करने की जरूरत है। इसके अलावा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी हिस्टेरेक्टॉमी के दिशा-निर्देशों को भी बेहतर तरीके से लागू किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास और आयुष मंत्रालयों के राज्य मंत्री डॉ. मुंजापारा महेंद्रभाई ने कहा कि मुझे बेहद खुशी

यूट्रस निकलने से महिलाओं की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। इसके चलते उन्हें कम उम्र में ही ऑस्टियोपोरोसिस और मेनोपॉज जैसी समस्याएं हो जाती हैं। समय के साथ भारत में कम उम्र की महिलाओं में भी यूट्रस रीमूवल के केसों में बढ़ोतरी देखी गई है, जो एक चिंता का विषय है।

है कि इंटिग्रेटेड हेल्थ एंड वेलबीइंग (आईएचडब्ल्यू) काउंसिल बायर और एफओजीएसआई ने एक साथ मिलकर इस तरह का अनूठा मंच पेश किया है, जो महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सकारात्मक बातचीत को बढ़ावा देता है, जिससे इस मुद्दे के आसपास मौजूद झिझक को कम करने में मदद मिलती है। इस तरह के प्रयासों से देश की महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरी कदमों की रूपरेखा भी तैयार होगी।'

ब्लूम आईवीएफ सेंटर्स के मेडिकल डायरेक्टर और एफओजीएसआई के प्रेसिडेंट-इलेक्ट डॉ. ऋषिकेश पाई ने स्वस्थ समाज के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर रखने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि सरकारी दिशानिर्देशों को पूरी तरह लागू किया जाए। बेहतर स्वास्थ्य परिणामों और यूट्रस के बचाव के तरीकों के लिए हेल्थकेयर प्रोफ़ेशनल्स को सक्षम बनाना जरूरी है। एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण स्वस्थ महिलाओं द्वारा किया जा सकता है, इसलिए महिला स्वास्थ्य सभी के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए।

इस अभियान ने महिलाओं और हेल्थकेयर प्रैक्टिशनर्स के बीच अत्यधिक मैन्स्ट्रुअल ब्लीडिंग जैसे स्त्री रोगों से निपटने के लिए समकालीन और वैकल्पिक दृष्टिकोण के बारे में जागरूकता बढ़ाई। लगभग दो साल की अवधि में इस खास अभियान ने महिलाओं को

हिस्टेरेक्टॉमी के परिणामों के बारे में जागरूक करने में सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे वे अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सोच-समझकर फैसले ले सकें। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में दिशा-निर्देशों के पालन को लेकर भी सिफारिशें प्रस्तुत की गईं।

इस पहल के बारे में बायर जाइडस फार्मा के वूमेन हेल्थकेयर विभाग के बिजनेस यूनिट हेड दीपक चोपड़ा ने कहा, जब महिलाओं के स्वास्थ्य की बात आती है तो जागरूकता ही सोचे-समझे फैसले लेने का तरीका है और इसलिए जागरूकता अभियान यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि महिलाएं अपने स्वास्थ्य के बारे में बेहतर और समय पर निर्णय लेने में सक्षम हों।

दीपक चोपड़ा ने महिला-स्वास्थ्य से जुड़े अत्यधिक मैन्स्ट्रुअल ब्लीडिंग जैसी जटिल चुनौतियों से निपटने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के महत्व पर जोर दिया और बायर द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए जा रहे और समाज को दिशा दिखा रहे कार्यों के बारे में बताया।

यह प्रमाणित हो चुका है कि हिस्टेरेक्टॉमी का संबंध कुछ प्रमुख पुरानी बीमारियों से है, जैसे - कॉर्डियोवैस्कुलर रोगों का खतरा, कैंसर, डिप्रेशन, मेटोबोलिक परेशानियां और डिमेंशिया आदि।

इस चर्चा में, आईएचडब्ल्यू काउंसिल के सीईओ कमल नारायण ने कहा, समुदायों और राष्ट्र के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं का स्वास्थ्य सबसे पहले आता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल, 'प्रिजर्व द यूट्रस' जैसी पहल को स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए बहुत महत्वपूर्ण बना देता है। अपने प्रयासों में महिलाओं के प्रजनन-स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर रखते हुए हम इसके साथ जुड़ी झिझक और भ्रमों को दूर करने में अहम योगदान दे सकते हैं। इससे महिलाओं का शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य भी सही रहता है।

आईएचडब्ल्यू काउंसिल के सीईओ कमल नारायण ने कहा, समुदायों और राष्ट्र के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं का स्वास्थ्य सबसे पहले आता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल, 'प्रिजर्व द यूट्रस' जैसी पहल को स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए बहुत महत्वपूर्ण बना देता है। अपने प्रयासों में महिलाओं के प्रजनन–स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर रखते हुए हम इसके साथ जुड़ी झिझक और भ्रमों को दूर करने में अहम योगदान दे सकते हैं।

स्ट्रोक का बढ़ता खतरा

मीमांसा डेस्क

स्ट्रोक दुनियाभर में मृत्यु का दूसरा सबसे प्रमुख कारण है। यह एक तंत्रिका संबंधी बीमारी है, जिससे पीड़ित शारीरिक रूप से अक्षमता का सामना कर सकता है। दुनिया में विकलांगता का यह तीसरा मुख्य कारण है। खासकर भारत में स्ट्रोक के चलते जीवन भर विकलांगता से प्रभावितों की संख्या ज्यादा है, वहीं इससे होने वाली मृत्यु दर भी अधिक है। एक आंकड़े के मुताबिक भारत में हर साल 1 लाख की जनसंख्या में लगभग 108 से 172 लोग स्ट्रोक से प्रभावित होते हैं। यह आंकड़े जाहिर करते हैं कि सचमुच यह स्वास्थ्य के लिये कितना बड़ा खतरा है। इसलिये आपके और आपके प्रियजनों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए, यह जानना महत्वपूर्ण है कि स्ट्रोक क्या है, इसके जोखिम कारक क्या हैं और लक्षणों को कैसे पहचानें।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि स्ट्रोक के दौरान मष्तिष्क में क्या होता है। दरअसल, मष्तिष्क एक विशिष्ट अंग है जो सोच, स्मरण शक्ति, भावनाओं, स्पर्श, मोटर स्किल्स, दृष्टि, श्वास, तापमान, भूख और हमारे शरीर को नियंत्रित करने वाली सभी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है। जब मस्तिष्क तक ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचाने वाली रक्त वाहिका या तो थक्के के कारण रूक जाती है या फट जाती है, तब स्ट्रोक होता है।

स्ट्रोक होने पर रक्त प्रवाह उस क्षेत्र तक नहीं पहुंच पाता है, जो विशेष शारीरिक क्रिया को नियंत्रित करता है तो तब शरीर का वह हिस्सा उस तरह काम नहीं करता जैसा उसे करना चाहिये। जैसे, यदि स्ट्रोक मस्तिष्क के पिछले हिस्से में होता है, तो संभावना है कि दृष्टि को प्रभावित करेगा। स्ट्रोक का प्रभाव मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि अवरोध कहां है और मस्तिष्क के टिश्यू कितने प्रभावित हुए हैं। क्योंकि मस्तिष्क का एक हिस्सा शरीर के दूसरे हिस्से को नियंत्रित करता है, एक स्ट्रोक जो एक तरफ को प्रभावित करता है, उसके परिणामस्वरूप शरीर के प्रभावित हिस्से में तंत्रिका संबंधी परेशानी पैदा होंगी। स्ट्रोक के खतरे से बचा जा सकता है, जिसमें कुछ विशेष बातों पर अमल करने की जरूरत है, जैसे, स्वस्थ जीवनशैली में बदलाव और स्ट्रोक के जोखिम कारकों को नियंत्रित करने के लिए अपने डॉक्टर के साथ मिलकर 80 प्रतिशत तक स्ट्रोक को रोका जा सकता है। वहीं स्ट्रोक की रोकथाम के लिए धूम्रपान बंद करना सबसे छोटा और मुख्य कदम है।

कई अध्ययनों से पता चलता है कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन पांच सिगरेट पीता है, तो उसमें स्ट्रोक होने का खतरा 12 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। यह व्यापक रूप से समझा जाता है कि धूम्रपान फ़ेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है, लेकिन कई लोगों को यह एहसास नहीं है कि यह मस्तिष्क और रक्त वाहिकाओं को भी नुकसान पहुंचाता है।

इन बातों के ध्यान के साथ जीवन में सक्रिय रहना भी बेहद जरूरी है। एक शोध के अनुसार, कार्यस्थल पर कुछ शारीरिक गतिविधि करने से कार्यस्थल पर निष्क्रिय रहने की तुलना में स्ट्रोक का खतरा 36% कम होता है। खाली समय में कोई काम नहीं करने के बजाय अगर व्यायाम किया जाय तो बड़े स्ट्रोक के खतरे में 20 से 25 प्रतिशत की कमी हो सकती है। चलने को उत्तम व्यायाम में शामिल किया गया है। उठें और चारों ओर चलें।

इसके अलावा, उच्च रक्तचाप से स्ट्रोक का खतरा हो सकता है। इसके कारण मस्तिष्क तक जाने वाली धमनियों में रक्त के थक्के बन सकते हैं, जिससे रक्त प्रवाह बाधित हो सकता है और संभावित रूप से स्ट्रोक हो सकता है। नियमित रूप से डॉक्टर के पास जाकर रक्तचाप की निगरानी करें।

शारिरिक निगरानी के साथ स्वस्थ जीवनशैली में आहार का विशेष स्थान है। ऐसे कई आहार हैं जो स्ट्रोक के खतरे को कम करते हैं, जैसे कि भरपूर मात्रा में फल, सब्जियां और कम वसा वाले डेयरी उत्पाद, साबुत अनाज, मछली और नट्स आदि ।

लगभग 10 से 15 प्रतिशत स्ट्रोक 50 या उससे कम उम्र के वयस्कों में होते हैं। हाल के शोध से पता चलता है कि वृद्धों और वयस्कों में स्ट्रोक के मुख्य कारक उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल, मोटापा और मधुमेह हैं, वही युवाओं में स्ट्रोक के प्रमुख कारण बनते हैं। इसलिये बचपन से युवावस्था में कदम रखने वाले युवाओं को शुरूआत से ही अपने रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल, ब्लड लिपिड और ब्लड ग्लूकोज की निगरानी करनी चाहिए।

स्ट्रोक होने पर तुरंत कार्रवाई महत्वपूर्ण होती है। इसके लिये संक्षिप्त नाम ''उ.क.क्क्ष.ट्र.ड्ड'' याद रखें। बी- बैलेंस, ई-आईस, एफ-फ़ेस, ए-आर्म, एस-स्पीच, टी-टाईम को दर्शाता है। अगर अचानक व्यक्ति में संतुलन की कमी हो रही हो, उसकी दृष्टि में बदलाव दिख रहा हो, या देखने में परेशानी हो, मुस्कुराने पर चेहरे का एक हिस्सा झुक रहा हो, हाथ ऊपर करने पर एक हाथ नीचे की ओर जाए, व्यक्ति की बात अजीब या अस्पष्ट प्रतीत हो तब बिना देर किये इनमें से कोई भी लक्षण देखने पर तुरंत आपातकालीन सेवाओं को कॉल करें।

नोट- उपर्युक्त लेख का उद्देश्य जागरूकता से जुड़ी सामान्य जानकारी प्रदान करना है। ध्यान रखें यह चिकित्सीय सलाह नहीं है।

सौंदर्य का जीवंत रूप कन्याकुमारी

इशित कुमार

दक्षिण भारत के अंतिम छोर पर बसा शहर कन्याकुमारी को वर्जिन प्रिंसेस के नाम से भी जाना जाता है। हर साल लाखों सैलानी इस जगह की सुंदरता को देखने के लिए पहुंचते हैं। तमिलनाडु का यह शहर कई खूबसूरत स्थानों के लिए मशहूर है, चाहे वह यहां के भव्य मंदिर हों या भारतीय महासागर से जुड़ा इसका तट।

कन्याकुमारी के कुंवारी राजकुमारी कहलाये जाने के पीछे एक कहानी है। पार्वती की अवतार कन्या देवी को शिव से विवाह करना था, जो अपनी शादी के दिन उपस्थित नहीं हो पाये। जिसके कारण शादी की दावत के लिए रखे गए चावल और अन्य अनाज कच्चे और अप्रयुक्त रह गए। समय बीतने के साथ-साथ कच्चा अनाज पत्थरों में बदल गया। कुछ लोगों का मानना है कि आज किनारे पर मौजूद छोटे-छोटे पत्थर, जो चावल की तरह दिखते हैं, वास्तव में उस शादी के अनाज हैं जो कभी मनाया ही नहीं गया था। कन्या देवी को अब एक कुंवारी देवी माना जाता है जो शहर में आने वाले तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आशीर्वाद देती है। कन्याकुमारी में उनका मंदिर एक शक्तिपीठ है।

और इसी वजह से कन्याकुमारी को वर्जिन प्रिंसेस के नाम से जाना जाता है।

कन्याकुमारी, भारत के सबसे दक्षिणी सिरे पर स्थित और तीन प्रमुख समुद्रों से घिरा, तमिलनाडु के सबसे शांत और सुंदर स्थानों में से एक है। यह अद्भुत तटीय शहर इतिहास, संस्कृति, प्राकृतिक सुंदरता और आधुनिकीकरण का अद्भुत मिश्रण समेटे हुए है; किलों और मंदिरों से लेकर समुद्र तटों और संग्रहालयों तक, हर किसी के लिए कुछ न कुछ है। हमने कन्याकुमारी में घूमने के लिए कुछ शीर्ष स्थानों का चयन किया है जिन्हें आपको निश्चित रूप से अपने यात्रा कार्यक्रम में शामिल करना चाहिएः

1) विवेकानन्द रॉक मेमोरियल

एक छोटे से द्वीप पर स्थित, विवेकानन्द रॉक मेमोरियल कन्याकुमारी का एक शीर्ष पर्यटन स्थल है। स्वामी विवेकानन्द ने 1892 में तीन दिनों के ध्यान के बाद यहीं ज्ञान प्राप्त किया था। यह भी माना जाता है कि देवी कन्या कुमारी ने इस चट्टान पर कठोर तपस्या की थी। चूंकि यह समुद्र के बीच स्थित है, इसलिए यहां तक पहुंचने का रास्ता नावों से है, जो अपने आप में एक शानदार अनुभव है। इस स्थान की आध्यात्मिक तरंगें और शांति, आसपास के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों के साथ मिलकर, विवेकानन्द रॉक मेमोरियल को कन्याकुमारी में एक प्रमुख आकर्षण बनाती है।

2) तिरुवल्लुवर प्रतिमा

विवेकानन्द रॉक मेमोरियल के निकट स्थित यह विशाल प्रतिमा इतिहास प्रेमियों और वास्तुकला प्रेमियों के बीच एक लोकप्रिय आकर्षण है। यह एक प्रमुख तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर को समर्पित है। 133 फुट ऊंची यह प्रतिमा 38 फुट ऊंचे आसन पर गर्व से खड़ी है और इसे दूर से देखा जा सकता है। यह स्थान बड़ा सांस्कृतिक महत्व रखता है और कन्याकुमारी में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

3) कन्याकुमारी बीच

यदि आप समुद्र तटों पर जाना पसंद करते हैं, तो कन्याकुमारी समुद्र तट आपका मन मोह लेगा। यह समुद्र तट तीन प्रमुख समुद्रों - बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर का संगम है। यह बीच अद्भुत है क्योंकि इन तीन समुद्रों का पानी आपस में नहीं मिलता है, इसलिए आप यहां पानी के तीन अलग-अलग रंग देख सकते हैं। आप यहां सूर्योदय, सूर्यास्त और चट्टानों से टकराती लहरों को निहारते हुए कुछ शांत समय बिता सकते हैं।

4) सनसेट प्वाइंट

यदि आप सुंदर परिवेश में कुछ शांत समय बिताना चाहते हैं तो सनसेट पॉइंट अवश्य जाएँ। कन्याकुमारी में देखने के लिए सबसे अच्छी चीजों में से एक शाम के आकाश और विशाल महासागर के बीच डूबते सूरज का विहंगम दृश्य है। यदि आप पूर्णिमा पर या उसके आसपास जाते हैं, तो आप डूबते सूरज की किरणों को उगती चाँदनी के साथ मिलते हुए भी देख सकते हैं। इसके अलावा, यह स्थान विवेकानन्द रॉक मेमोरियल और आसपास के अन्य आकर्षणों के शानदार दृश्य प्रदान करता है, और यह फोटोग्राफरों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

5) व्यू टावर

समुद्र से घिरा और मनमोहक दृश्यों वाला, व्यू टॉवर कन्याकुमारी के सबसे अद्भुत पर्यटन स्थलों में से एक है। टावर पांच मंजिला है और इसका निर्माण गोलाकार आकार में किया गया है। शीर्ष पर पहुंचने पर आसपास के सुंदर दृश्य, सुखदायक समुद्री हवा के साथ मिलकर, आपको बेजोड़ ऊर्जा और उत्साह से भर देंगे।

6) आवर लेडी ऑफ रैनसम चर्च

मदर मैरी को समर्पित यह खूबसूरत चर्च, समुद्र तट के पास स्थित है और इसके पीछे समुद्र की तेज लहरें हैं, जो कन्याकुमारी में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। चर्च में शानदार गोथिक वास्तुकला है, जिसकी दीवारों और छत पर आकर्षक नक्काशी है। इस पवित्र स्थान का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि इसमें मदर मैरी की साड़ी पहनी हुई मूर्ति है, जो एक आम चर्च में साधारण रूप से नहीं देखा जाता है। यदि आप शाम को जाते हैं, तो आप यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि रोशनी में वह स्थान कितना सुंदर दिखता है।

7) भारत माता मंदिर

भारत माता को समर्पित भारत माता मंदिर का आकार 12000 वर्ग फुट है और यह स्वामी विवेकानन्द की 12 फुट ऊंची प्रतिमा के साथ-साथ मातृत्व की अवधारणा को दर्शाने वाली कई अन्य मूर्तियों और चित्रों के लिए जाना जाता है। मंदिर में एक रामायण मंदिर भी शामिल है, जो 108 लकड़ी के पैनलों पर सुंदर नक्काशीदार मूर्तियों और चित्रों के माध्यम से वाल्मिकी की रामायण की कहानी को दर्शाता है। रामायण मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान हनुमान की 27 फुट ऊंची ग्रेनाइट प्रतिमा एक प्रमुख आकर्षण है।

अगर आप कन्याकुमारी की ट्रिप पर जाना चाहते हैं तो इसका सबसे अच्छा समय अक्टूबर से लेकर मार्च तक है। इन महीनों के बीच यहां का मौसम घूमने के लिये सबसे अच्छा है। यहां पहुंचने के लिये हवाई मार्ग, बसें, व ट्रेन मार्ग उपलब्ध हैं। आप अपनी सुविधा के अनुसार वहां पहुंच सकते हैं।

पुनश्चः भारत में एक छोर से दूसरे छोर की बात की जाए तो कश्मीर से कन्याकुमारी का नाम लिया जाता है। कश्मीर को जहां धरती का स्वर्ग कहा गया है, तो वहीं देश का दूसरा छोर कन्याकुमारी भी अपनी बेपनाह और निश्छल खूबसूरती समेटे हुए है। जिसका वर्णन उपर्युक्त पंक्तियों में किया गया है। सचमुच अपने छोटे आकार के बावजूद, कन्याकुमारी में कई आकर्षण हैं और यह उन लोगों के लिए एक पसंदीदा स्थान है जो व्यस्त शहरों से दूर एक बेहद शांत जगह खुद की तलाश में जाना चाहते हैं।

झारखंड में मशहूर एडवेंचर टूरिज्म

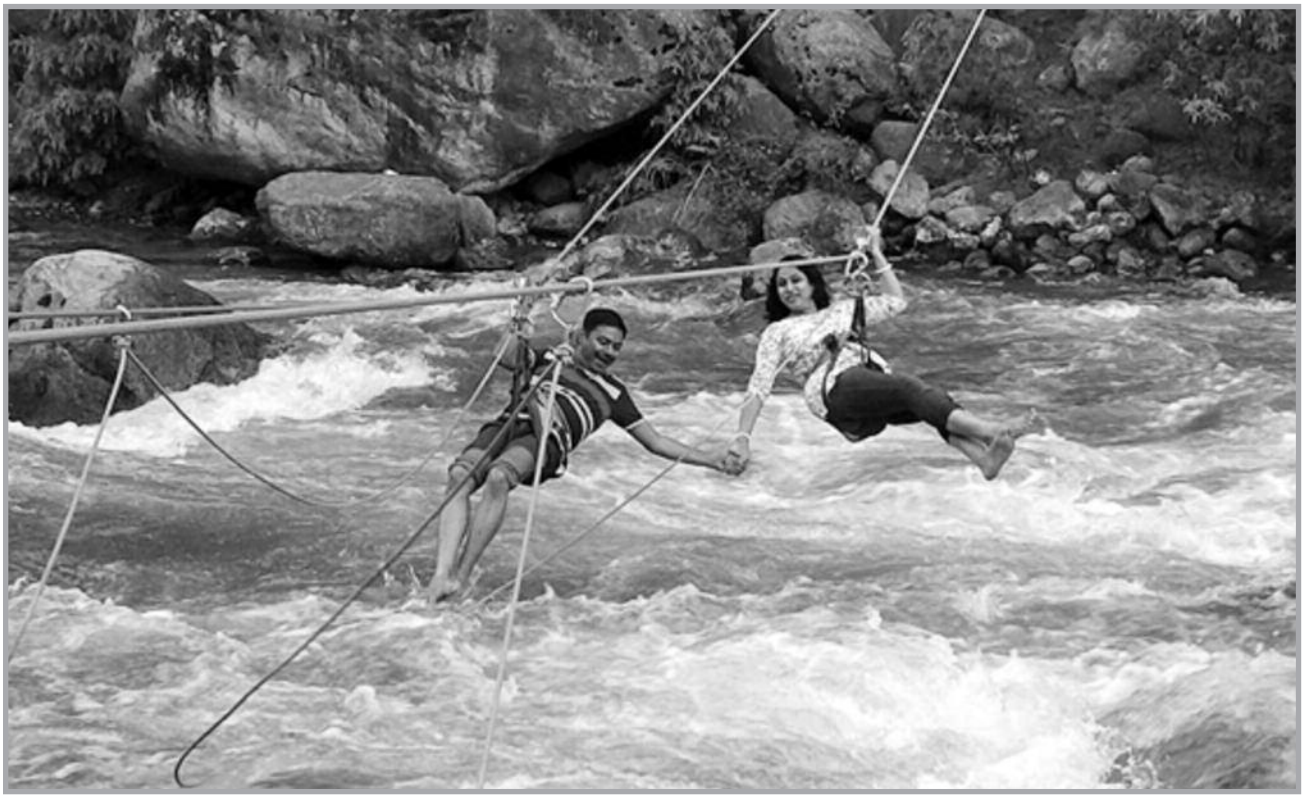

सुकांति साहू

प्रकृति के गर्भ में बसे प्रदेश झारखंड में अनेक प्राकृतिक स्थल हैं। झारखंड को प्रकृति ने प्रचुर जैव-विविधता, सुखद जलवायु, समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक स्थलों और सदियों पुरानी आदिवासी कलाओं से नवाजा है। जो राज्य को पर्यटकों के लिए गंतव्य बनाता है। झारखंड के आकर्षणों की बात करें तो डिमना झील, टाटा स्टील जूलॉग सेंटर, हुडको झील, शानदार जंगल, विविध वन्य जीवन, आकर्षक झरने, उत्तम हस्तशिल्प, साहसिक खेल, शानदार झील, करामाती शास्त्रीय संगीत, लोक नृत्य और सबसे बढ़कर, मेहमान नवाजी और शांतिप्रिय लोगों के साथ एक मनोरम गंतव्य है। 14 से 27 नवंबर तक दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित व्यापार मेले में झारखंड पर्यटन ने अपना स्टॉल लगाकर राज्य की विभिन्न पर्यटन स्थलों की जानकारी लोगों से साझा की।

झारखंड टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन की मैनेजर ने झारखंड में टूरिज्म पर जानकारी देते हुए बताया कि झारखंड की राजधानी रांची को 'सिटी ऑफ़ फॉल्स' के नाम से भी जाना जाता है। जहाँ पर 4 बड़े और 5 छोटे आकार के जल प्रपात है। जिसमे हुंडरू जल प्रपात की अधिकतम ऊंचाई 98 मीटर तक और दशम जलप्रपात में 10 अलग अलग धाराएँ मिल कर उसे और भी ज्यादा खूबसूरत बनाती हैं। झारखंड प्रदेश अपनी धार्मिक स्थलों जैसे पार्श्वनाथ मंदिर, मां भद्रकाली मंदिर, मलूटी मंदिर, पारसनाथ मंदिर, रजरप्पा मंदिर और देवघर के लिए पसंद किया जाता है। पर्यटक यहाँ नेतरहाट में मनमोहक सूर्योदय और सूर्यास्त देखने के लिए आते हैं वहीं बेतला नेशनल पार्क में हाथियों को देखा जा सकता है बेतला नेशनल पार्क अब टाइगर रिजर्व पार्क के लिए मशहूर हो रहा है झारखंड पर्यटन ने रांची के पास स्थित पतरातू में एडवेंचर पार्क का निर्माण करवाया है। जिसमे बच्चों के साथ बड़े भी एडवेंचर का मजा ले सकते हैं।

नए पसंदीदा स्थान के रूप में तेजी से उभर रहा झारखंड अब साहसिक खेलों के लिए एक लोकप्रिय केंद्र है। जमशेदपुर और गिरिडीह के हरे-भरे जंगल इसे जंगल सफारी, ट्रेकिंग, पैडल बोटिंग और पर्वतारोहण के लिए आदर्श बनाते हैं। प्राकृतिक दृश्यों के साथ रॉक क्लाइम्बिंग के लिए चाईबासा और नेतरहाट, रामगढ़ में सिकिदिरी और दसम प्रमुख हैं। पानी के रोमांचक खेलों का आनंद लेने के लिए, कैनोइंग, कयाकिंग और वाटर स्कीइंग के लिए कांके बांध, रुक्का बांध, पतरातू बांध और डिमना झील की यात्रा की जा सकती है । हॉट एयर बैलून की रोमांचक सवारी के लिए मोराबादी, रांची, जमशेदपुर, देवघर और गिरिडीह जैसी जगहें पर्यटकों को बेहतरीन अनुभव प्रदान कराती है। उन्होंने बताया की झारखंड पर्यटन अपने डैम और जल प्रपातों के आस पास वहीं के लोगो को पर्यटकों के सत्कार का कार्यभार देते हैं जिससे उनके लिए अच्छे रोजगार का सृजन होता है।

प्रेरक व्यक्तित्व-एक परिचय

चिन्मय दत्ता

शख्सीयतों का जीवन सदैव प्रेरणास्पद होता है। जन्मदिवस मनाने की परंपरा का आधार भी संभवतः यही है, ताकि लोग ऐसे लोगों के जीवन से परिचित हो सकें, जो उन्हें नई दिशा देने में सक्षम हैं। कुछ हस्तियां हैं, जो आज भी अपने प्रखर व्यक्तित्व से हमें प्रेरित कर रही हैं, तो कई महान शख्सीयतें से इस संसार से विदा लेकर भी हमें सदैव प्रेरित करती रहेंगी। जन्मदिवस विशेष के इस कॉलम में हम सितंबर में जन्मी ऐसी ही कुछ महान शख्सीयतों के जीवन के बारे में जानेंगे। इनके जीवन के बारे में जानकर हम स्वयं को नई दिशा देने में सक्षम हो सकते हैं।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का जन्म 10 दिसम्बर 1878 को दक्षिण भारत के सलेम जिले के थोराप्पली गांव में तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा होसुर में और उच्च शिक्षा मद्रास और बेंगलुरु में हुई। भारतीय राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले इस महापुरुष की राजनीति में गहरी पकड़ थी, जिसके चलते कांग्रेस के तत्कालीन सभी नेता इनकी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता का लोहा मानते रहे।

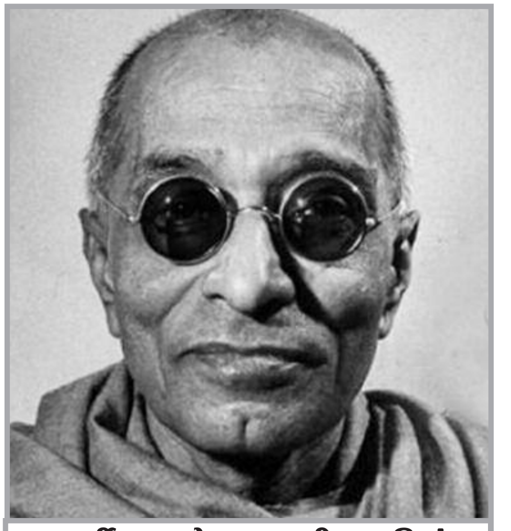

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी - 10 दिसंबर

1937 में इनके नेतृत्व में कांग्रेस ने मद्रास प्रांत में विजय प्राप्त की जिसके बाद इन्हें मद्रास का मुख्य मंत्री बनाया गया। फिर 1946 में जब देश की अंतरिम सरकार बनी तब केन्द्र सरकार में इन्हें उद्योग मंत्री बनाया गया। इसके बाद 1947 में देश के पूर्ण स्वतंत्र होने के बाद इन्हें पश्चिम बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया गया फिर 1948 में इन्हें स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल जैसे अति महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त हुए। 1950 में इन्हें पुनः केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्राणांत के बाद यह केन्द्रीय गृह मंत्री बनाए गए। 1952 की आम चुनाव में यह लोकसभा सदस्य बने और मद्रास के मुख्य मंत्री निर्वाचित हुए। वर्ष 1954 में इनको भारत रत्न से विभूषित किया गया। उल्लेखनीय है कि ये भारत रत्न पाने वाले पहले व्यक्ति थे। ये विद्वान और अद्भुत लेखन प्रतिभा के धनी थे और इनके द्वारा रचित 'चक्रवर्ति तिरुमगन' के लिए इन्हें 1958 में तमिल साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया। 'स्वराज' नामक पत्र में उनके लेख निरंतर प्रकाशित होते रहते थे। 25 दिसम्बर 1972 को मद्रास में इनका देहांत हो गया।

ब्रिटिश भारत के पेशावर में लाला गुलाम सरवर के घर मोहम्मद युसूफ खान का 11 दिसम्बर 1922 को जन्म हुआ था। बाद में इनका परिवार मुम्बई आकर फल का व्यापार करने लगा। इसी दौरान संयोग से युसूफ खान का परिचय देविका रानी से हो गया और देविका ने युसूफ का नाम दिलीप कुमार रखते हुए इन्हें अभिनेता बना दिया।

दिलीप कुमार ने 1944 में फिल्म 'ज्वार भाटा' से अपने फिल्मी कैरियर की शुरुआत की और इनकी पहली हिट फिल्म 1947 में प्रदर्शित 'जुगनू' थी। इस फिल्म ने इन्हें हिट फिल्मों के स्टार के श्रेणी में शामिल कर दिया और स्वतंत्र भारत के पहले दो दशकों में देश के नम्बर वन अभिनेता के रूप में स्थापित हो गए। अपनी 1964 में प्रदर्शित फिल्म 'लीडर' की पटकथा लेखन इन्होंने किया। जिसका गीत 'अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं३' प्रसिद्ध है। आश्चर्य की बात है कि फिल्म कामयाब न होने के बावजूद इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्म फ़ेयर अवार्ड मिला था। इनकी डबल रोल वाली 1967 में बनी फिल्म 'राम और श्याम' की लोकप्रियता अब भी है। इनका नाम सबसे ज्यादा पुरस्कार पाने वाले भारतीय अभिनेता के रूप में 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में शामिल है। इसके साथ ही आठ बार फिल्म फ़ेयर सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार का कीर्तिमान इनके नाम है। भारत सरकार से 1991 में पद्म भूषण से विभूषित होने के बाद 1995 में दादा साहेब फाल्के अवार्ड अपने नाम किया वहीं, 2015 में पद्म विभूषण से सम्मानित हुए। सफलता के सफर पर नये आयाम और सम्मान हासिल करते हुए 7 जुलाई 2021 में इनका देहांत हो गया।

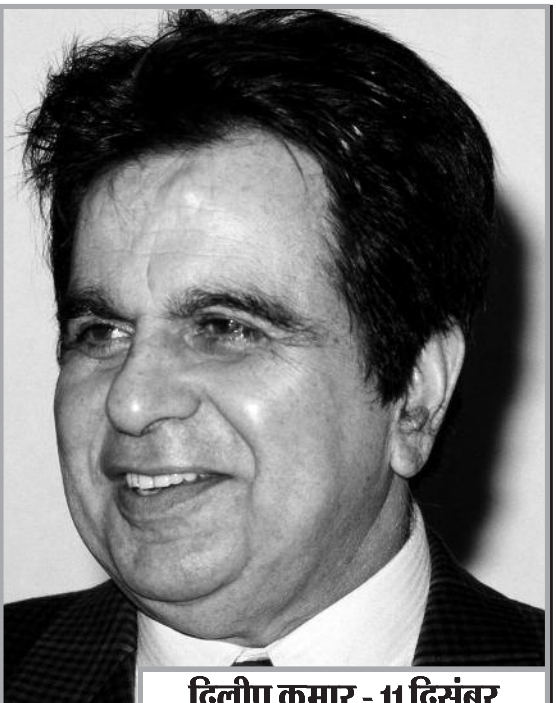

दिलीप कुमार - 11 दिसंबर

गुरु घासीदास - 17 दिसंबर

तत्कालीन मध्य प्रदेश के रायपुर जिला अंतर्गत गिरौदपुरी गांव में महंगूदास के घर 17 दिसम्बर 1756 को सतनाम पंथ का संस्थापक गुरु घासीदास अवतरित हुए। इनकी माता का नाम अमरौतिन था। बाल्यकाल से ही घासीदास के हृदय में वैराग्य का भाव प्रस्फुटित हो चुका था। इनके सात वचन सतनाम पंथ के 'सप्त सिद्धांत' के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

इनके जीवन का लक्ष्य सत्य से साक्षात्कार करना होने के कारण समाज को नई दिशा प्रदान करने में इन्होंने अतुलनीय योगदान दिया। छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वीर नारायण सिंह पर इनके सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा, और ऐसे ही लाखों लोग इनके अनुयायी हो गए। इनके अनमोल विचार और सकारात्मक सोच हिन्दू और बौद्ध धर्म विचारधाराओं से मिलते हैं। इनका अंतर्ध्यान 1850 में अज्ञात रूप से हो गया।

इनके बाद इनकी शिक्षाओं का प्रचार इनके पुत्र बालकदास ने किया। इनका जीवन-दर्शन युगों तक मानवता का संदेश देता रहेगा। छत्तीसगढ़ प्रशासन ने इनकी स्मृति में सामाजिक चेतना और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में गुरु घासीदास सम्मान स्थापित किया है। 1901 जनगणना के अनुसार लगभग 4 लाख लोग सतनाम पंथ से जुड़ चुके थे। सतनामी समाज को 1950 के बाद आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े होने के कारण अनुसूचित जाति में शामिल कर लिया गया। बिलासपुर में 16 जून 1983 में 'गुरु घासीदास विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई। भारतीय डाक ने 1987 में 'गुरु घासीदास के सम्मान' में डाक टिकट जारी किया।

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध संगीतकार नौशाद अली के लिए मुंबई उम्मीदों का शहर था। यहां इन्हें पहले ठिकाने के रूप में दादर के ब्रॉडवे सिनेमा घर के सामने का फुटपाथ मिला। तब इन्होंने सपना देखा था कि कभी इस सिनेमा घर में मेरी कोई फिल्म लगेगी और आखिर 5 अक्टूबर 1952 को 'बैजू बावरा' उसी हॉल में रिलीज हुई। रिलीज के समय नौशाद ने कहा, इस सड़क को पार करने में मुझे सत्रह साल लग गए...

संगीतकार नौशाद अली का जन्म लखनऊ में मुंशी वाहिद अली के घर 25 दिसम्बर 1919 को हुआ। नौशाद, मैट्रिक पास करने के बाद लखनऊ के 'विंडसर एंटरटेनर म्यूजिकल ग्रुप' के साथ दिल्ली, मुरादाबाद, जयपुर, जोधपुर और सिरोही की यात्रा पर निकले। बाद में यह म्यूजिकल ग्रुप बिखर गया तो उन्होंने लखनऊ लौटने के बजाय मुंबई का रुख किया फिर 1935 में मुंबई आ गए।

इन्हें पहली बार स्वतंत्र रूप से 1940 में 'प्रेम नगर' में संगीत देने का अवसर मिला, लेकिन इनकी पहचान 1944 में प्रदर्शित 'रतन' से बनी। यहीं से इनकी कामयाबी का सफर शुरू हुआ।

फिल्मों में बेहतरीन संगीत देने के लिये नौशाद को कई पुरस्कारों से विभूषित किया गया जिनमें, 1954 में फिल्म 'बैजू बावरा' के लिए बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर का फिल्म फ़ेयर अवार्ड, 1981 में दादा साहेब फालके, 1984 में लता अलंकरण से सम्मानित हुए फिर 1992 में भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया। इन्होंने छोटे पर्दे के लिए 'द सोर्ड ऑफ टीपू सुल्तान' और 'अकबर द ग्रेट' जैसे धारावाहिक में भी संगीत दिया। 1960 में बनी 'मुग़ल-ए-आज़म' को 2004 में जब रंगीन किया गया तब इन्हें बेहद खुशी हुई। इनका कौशल इस बात की मिसाल है कि गुणवत्ता संख्याबल से कहीं आगे होती है। मुंबई में 5 मई 2006 को इन्होंने इस दुनिया को विदा कह दिया।

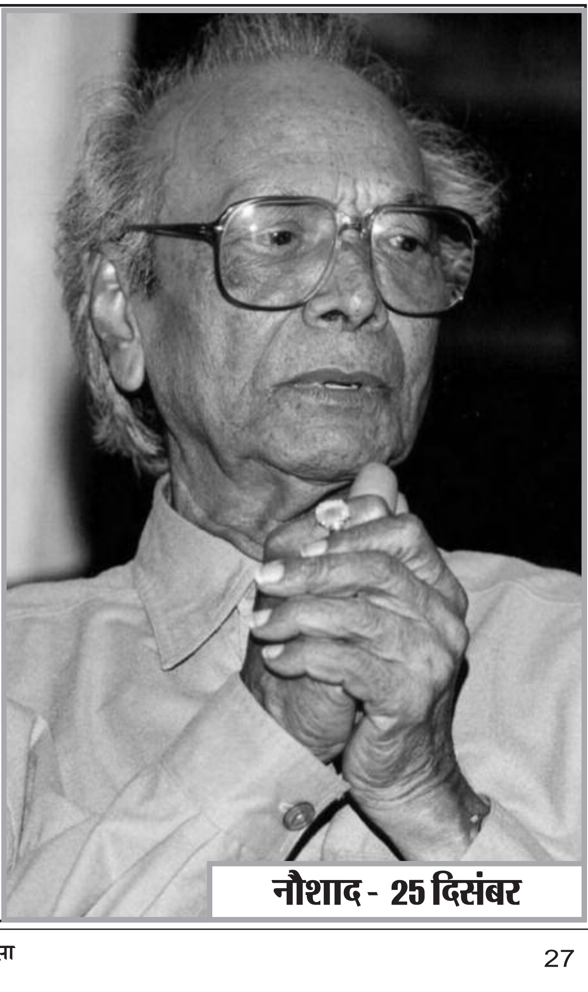

नौशाद - 25 दिसंबर

मतदान का जश्न

बी.के.झा

इस बार छत्तीसगढ़ में दो चरणों में हुए विधानसभा चुनाव में सुदूर क्षेत्रवासियों ने मतदान कर देशवासियों को एक संदेश दिया कि विकास के इस दौर में हम भी शामिल हो रहे हैं। दरअसल, छत्तीसगढ़ में सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा एवं बस्तर के अलग-अलग दुर्गम क्षेत्रों में मतदान केन्द्रों के बनने से यहां रहने रहने वाले ग्रामीणों ने पहली बार मतदान किया और इसका जश्न मनाया।

आजादी के 76 साल बाद जंगलों से घिरे बीहड़ में रहने वाले लोगों की आंखों में अब उम्मीद की किरण नजर आने लगी है, जिसे सरकार के प्रयासों का नतीजा कहा जा सकता है।

क्षेत्र में सफल मतदान हो, इसके लिये एक ठोस रणनीति के तहत दुर्गम क्षेत्रों को विकास से जोड़ने के लिये सीआरपीएफ कैंप लगाए गये। ग्रामीणों को उनकी सुरक्षा के लिये आश्वस्त कर विकास से जुड़ने के लिये प्रेरित किया गया। इसका परिणाम है कि अब वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित हुए बिना क्षेत्रीय ग्रामीण प्रगति का रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। अब उन्हें अपने क्षेत्र में स्कूल, हॉस्पिटल, सड़कें और बिजली जैसी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति की दरकार है। वर्षों विकास के इंतजार होती बूढ़ी आंखों में रोशनी की चमक नजर आने लगी है।

आजाद भारत के भीतर न जाने कब से यह दुर्गम इलाके अपने लिये आजादी की सूरत की चाहत में राहें देख रहे हें। कई गांवों ने बिजली नहीं देखीं तो पीने के साफ पानी के लिये लोग ललायित हैं। छत्तीसगढ़ के सुकमा-दंतेवाड़ा सीमा पर स्थित गांव रेटेमपरा में 90 परिवारों के लिए एक हैंडपंप है। इस गांव में अब तक बिजली नहीं पहुंची है। हाल ही में चुनाव के दौरान इस गांव के निवासी ने एक निजी चैनल को बताया कि भारत के स्वतंत्र होने के बाद से 76 वर्षों में उन्होंने कभी बिजली नहीं देखी है। ळ्हमने स्थानीय अधिकारियों को कई बार लिखा है लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। पहले इस गांव में नक्सली आते थे लेकिन अब सुरक्षा कैंप खुलने के बाद

उन्होंने आना बंद कर दिया है. शायद अब सरकार हमारी दलीलें सुनेगी।

यहां के ग्रामीण स्वीकार करते हैं कि अभी हाल तक, सीपीआई (माओवादी) के सदस्य भोजन और आश्रय मांगने के लिए क्षेत्र में आते थे, शायद यही कारण है कि सरकारी अधिकारी गांव को नजरअंदाज करते थे।

ग्रामीणों के मुताबिक उन्होंने अब से पहले कभी मतदान केन्द्रों को नहीं देखा, क्योंकि यहां बुलेट का साया था। वामपंथी ग्रामीणों को विकास से जुड़ने के लिये डरा-धमकाकर मना करते थे, लेकिन नक्सलियों का गढ़ रहे सुकमा और बस्तर जैसे क्षेत्रों में ग्रामीणों ने बैलेट को चुना, और इन क्षेत्रों में बंपर वोटिंग हुई। पहली बर यहां के लोगों ने मतदान का जश्न मनाया।

वाकई मतदान उनके लिये एक त्योहार है, जिसे उन्होंने न कभी देखा और न ही इसका अनुभव किया, लेकिन आजादी के बाद पहली बार वोट डालने के अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग कर सरकार चुनने में अपनी भूमिका निभाई।

वास्तव में 2023 का विधानसभा चुनाव छत्तीसगढ़ के इन बीहड़ क्षेत्रों में लोगों के लिये उम्मीद की किरण लेकर आया है। उन्हें अब मतदान के साथ अपने क्षेत्र में बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिये अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य एवं रोजगार की तलाश है, जिससे वह भी देश की मुख्यधारा में शामिल हो सकें।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

विकल्प मीमांसा

सदस्यता कूपन

मैं विकल्प मीमांसा हिंदी मासिक पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूं।

मेरा नाम श्री/श्रीमती ....

मेरा पता ....

जिला .... राज्य .... पिन कोड ....

फोन (आवास).............................. कार्यालय.................................

एक वर्ष के लिए 450 रुपये

दो वर्ष के लिए 850 रुपये

नोट : दरें और पेशकश सिर्फ भारत में ही मान्य हैं। शुल्क प्राप्ति के बाद अंक आप तक पहुंचने में 4-5 सप्ताह समय लग सकता है। पत्रिका केवल साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी। पत्रिका के डाक द्वारा नहीं मिलने या खो जाने की स्थिति में हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। सभी विवादों का निपटाना दिल्ली न्यायालय के अधीन होगा।

सदस्यता शुल्क केवल बैंक डिमांड ड्राफ्ट/चैक/मनी ऑर्डर

द्वारा विकल्प मीमांसा के पक्ष में नई दिल्ली में देय होगा।

विकल्प मीमांसा

सी-163, गली नं.38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3, नई दिल्ली-59

फोन नं. 9350993815, 9999496969

E-mail : vikalpmimansa@yahoo.in

खेल के लिए यादगार रहा 2023

इशित कुमार

वर्ष 2023 अब अपने अंत की ओर बढ़ रहा है। गौरतलब है कि यह साल सभी खेल प्रेमियो के लिए कुछ खट्टी-मीठी यादें छोड़ कर जा रहा है। हर खेल की अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हमने देखा कि कैसे सभी खिलाड़ियों ने जीत के लिए अपनी-अपनी जान लगाई और कुछ को ताज मिला तो कुछ खिलाड़ियों की मेहनत का नतीजा उन्हें नसीब ना हुआ। आइए रुख करते हैं, 2023 के ऐसे ही कुछ बड़े पलों की ओर जिसने, दर्शकों की यादों में अपनी एक छाप छोड़ीः

ऑस्ट्रेलिया छठी बार बना वर्ल्ड चैंपियन

हाल ही में ख़त्म हुए क्रिकेट विश्व कप में हमने कई ऐसे लम्हे जिए जिसके लिए पूरी दुनिया के खेल प्रेमी तरसते हैं। अक्टूबर महीने में, भारत की मेजबानी में शुरू हुए विश्व कप में मेज़बान समर्थको का ज़ोर शोर से समर्थन देना, खिलाड़ियों का लाजवाब प्रदर्शन और भारतीय टीम का अच्छा माहौल देख कर लगा कि इस साल शायद 12 साल का इंतज़ार ख़त्म हो जाएगा। जब अहमदाबाद में फाइनल हुआ तो भारत का सामना ऑस्ट्रेलिया से हुआ, तब ये सारे सपने टूट गए क्योंकि एक जबरदस्त ऑस्ट्रेलियाई टीम ने भारत को 6 विकेट से हराया और रिकॉर्ड बना कर छठी बार विश्व कप को अपना नाम किया। पूरे विश्व कप में ऐसे कई लम्हे आए जो इसे यादगार बनाए रखेंगे। मैक्सवेल के नाबाद 201 रन जो उन्हें अफगानिस्तान के खिलाफ़ मारे थे, वो इतिहास के पन्नो में अंकित मिलेंगे। श्रीलंका और बांग्लादेश में मुकाबले में भी एक ऐसा किस्सा हुआ जब एंजेलो मैथ्यूज ऐसे पहले खिलाड़ी बने जो ''टाइम-आउट'' नियम द्वारा आउट हुए। कुछ खिलाड़ियों ने इस विश्व कप में जबरदस्त छाप छोड़ी जिसमें भारत के विराट कोहली, जिन्होंने सबसे ज्यादा शतक विश्व कप में बनाये, मोहम्मद शमी, जिन्होंने विश्व कप में सबसे ज्यादा विकेट ली, न्यूजीलैंड के रचिन रवींद्र, जिन्होंने अपने शानदार प्रदर्शन से विश्व कप में एक बड़ा नाम कमाया, जैसे खिलाड़ी शामिल हैं।

मैनचेस्टर सिटी का 'ट्रेबल'

फुटबॉल जगत में जाने पर इस साल एक ही टीम की चर्चा सबसे ज्यादा थी, जो मैनचेस्टर सिटी थी। पेप गार्डियोला द्वारा मैनेज की गई मैनचेस्टर सिटी ने इस साल कई रिकॉर्ड तोड़े और ऐसी ही दूसरी इंग्लिश टीम बनी जिन्होंने 'ट्रेबल' पूरा किया। मैनचेस्टर सिटी ने पिछले दशक में, शेख मंसूर द्वारा खरीदे जाने के बाद कई सफलताएं हासिल की हैं। मैनचेस्टर सिटी ने पिछले दशक में, शेख मंसूर द्वारा खरीदे जाने के बाद कई सफलताएं हासिल की हैं। पिछले 6 साल में 5 बार प्रीमियर लीग चैंपियन रह चुकी सिटी के लिए एक ही बड़ा लक्ष्य था चैंपियंस लीग को जीतना। हालांकि, इस साल प्रीमियर लीग जीतना भी मैनचेस्टर सिटी के लिए टेढ़ी खीर लग रहा था, क्योंकि आर्सेनल अपने पूरे तेवर दिखा रही थी और साल का ज्यादातर हिस्सा वही टॉप पर बैठा था। पर मैनचेस्टर सिटी द्वारा आखिरी दिनों के प्रयासों के सामने आर्सेनल टिक नहीं पाई और मैनचेस्टर सिटी एक बार फिर प्रीमियर लीग की चैंपियन बनी। उनका सफर यही पर खत्म नहीं हुआ था, इसके बाद वह एफए कप के भी फाइनल में पहुँच चुकी थी, जहाँ उनका मुकाबला उन्हीं के सिटी राइवल्स, मैनचेस्टर यूनाइटेड के साथ था। पर उनके सामने मैनचेस्टर यूनाइटेड भी कुछ कर न सकी और 2-1 की स्कोर

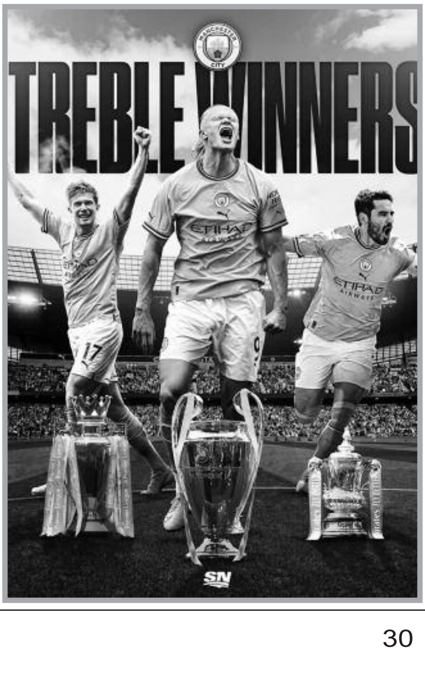

लाइन के साथ मैच मैनचेस्टर सिटी के नाम रहा।

हां सब जीतने के बाद भी सफर अभी खत्म नहीं हुआ था। मैनचेस्टर सिटी का सबसे बड़ा मैच उनका इंतजार कर रहा था। पहली बार चैंपियंस लीग जीतने का मौका उनके सामने खड़ा था जहां उन्हें इंटर मिलान का सामना करना था। यह मैच दोनों तरफ से बराबर लग रहा था, दोनों ही टीमें एक- दूसरे पर अटैक्स कर रही थी, पर कामयाब हुए तो बस मैनचेस्टर सिटी के रोडरी जिनके गोल ने उन्हें चैंपियन बनाया और इसी तरह मैनचेस्टर सिटी ने 'ट्रेबल' पूरा किया।

लियोनेल मेसी ने आठवीं बार जीता बैलेंडिओर

18 दिसंबर 2022 को फ्रांस के खिलाफ़ वर्ल्ड कप जीतने के बाद सबका यही कहना था कि लियोनल मेसी ने फुटबाल को पूरा कर लिया है और उस समय यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं था कि 2023 से एंड सीज़न का बैलेंडिओर मेसी के ही नाम होगा। हालांकि उसके बाद, खासकर जब, मैनचेस्टर सिटी ने ट्रैबल पूरा किया, तब कई फुटबॉल पंडितों के ज़ुबान पर अरलिंग हॉलैंड का भी नाम आया, पर जिन भी देशों के पत्रकारों ने इस समारोह में वोट किया, उसमें मजोरिटी विजेता, लियोनेल मेसी बने और ऐसे पहले खिलाड़ी बने जिन्होंने आठवीं बार यह खिताब अपने नाम किया। वह अपने चिर प्रतिद्वंदी, क्रिस्टियानो रोनाल्डो से तीन की बढ़त पर आ गए।

विराट कोहली ने तोड़ा सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड

क्रिकेट विश्व कप 2023 में हमने बहुत सारे रिकॉर्ड टूटते हुए देखे, लेकिन शायद सबसे बड़ा रिकॉर्ड विराट कोहली द्वारा टूटा। इस क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 का अंत भारत के लिए उम्मीद के मुताबिक नहीं हुआ, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर विराट कोहली का विश्व कप शानदार रहा। उन्होंने न सिर्फ एक क्रिकेट वर्ल्ड कप टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड तोड़ा, बल्कि उन्होंने सचिन का सबसे ज्यादा वनडे शतक लगाने का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। विश्व कप के सेमीफ़ाइनल में न्यूज़ीलैंड के ख़िलाफ़ बेहद अहम मैच के दिन विराट कोहली ने क्रिकेट के वन डे फॉर्मेट में अपना 50वां शतक लगाकर सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इस लम्हे को देखने के लिए सचिन तेंदुलकर खुद मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में मौजूद थे। जैसे ही विराट कोहली ने अपना शतक पूरा किया तो उन्होंने स्टैंड्स की तरफ देखा और सचिन तेंदुलकर को प्रणाम किया।

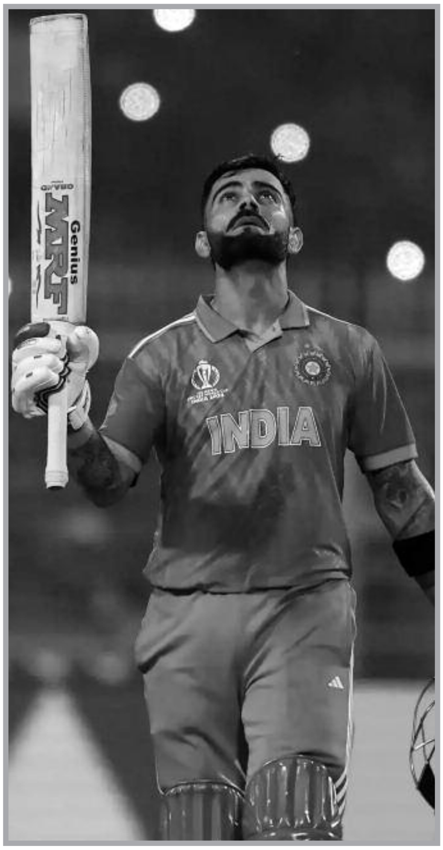

नीरज चोपड़ा ने जीता वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल

भारतीय एथलेटिक्स के लिए एक ऐतिहासिक क्षण में, नीरज चोपड़ा ने हंगरी के बुडापेस्ट में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों के भाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। 'भारतीय एथलेटिक्स के गोल्डन ब्वाय' ने इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल करने वाले पहले भारतीय एथलीट बनकर इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया। 28 अगस्त 2023 के दिन, असाधारण कौशल का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने अपने दूसरे प्रयास के दौरान 88.17 मीटर का शानदार थ्रो दर्ज किया, जिससे पूरे आयोजन में उनका दबदबा कायम हो गया।

दिसंबर में सिनेमाघरों में सितारे

मीमांसा डेस्क

दिसंबर क्रिसमस और आने वाले नए साल का समय है, इसे जश्न का समय भी कहा जाता है। क्रिसमस के मौके का लुत्फ उठाने के लिए बॉलीवुड भी हमें दिसंबर महीने में कुछ बेहतरीन आने वाली फिल्में उपलब्ध करा रहा है। बड़े पर्दे पर शाहरुख खान, रणबीर कपूर, अनिल कपूर, विक्की कौशल आदि सितारे नजर आएंगे।

एनिमल

हिंसक अपराध और एक्शन से भरपूर यह फिल्म हमें अनिल कपूर और रणबीर कपूर को पिता और पुत्र की भूमिका में दिखाती है। रणबीर के साथ मुख्य भूमिका में रश्मिका मंदाना हैं, जबकि बॉबी देओल मुख्य नायक हैं। जैसा कि ट्रेलर में विस्तार से बताया गया है, रणबीर एनिमल में अर्जुन नाम के एक अमीर, आश्रय प्राप्त लड़के की भूमिका निभाते हैं, जो अपने पिता, उद्योगपति बलबीर सिंह (अनिल कपूर) को अपना आदर्श मानकर बड़ा होता है। अर्जुन, अपने पिता बलबीर से भयभीत होने के साथ उससे भावनात्मक जुड़ाव नहीं होने से आहत है। जब अर्जुन वर्षों बाद अपने परिवार के पास लौटता है तो भावनाओं की यह उलझन खतरनाक रूप ले लेती है। एनिमल को वांगा, उनके बड़े भाई प्रणय रेड्डी वांगा और सुरेश बंडारू ने लिखा है, और संवाद सौरभ गुप्ता का है। फिल्म को केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) द्वारा 'ए' (केवल वयस्क) प्रमाणपत्र दिया गया है। इसका निर्माण टी-सीरीज फिल्म्स, भद्रकाली पिक्चर्स और सिने1 स्टूडियोज द्वारा किया गया है। 3 घंटे और 21 मिनट की अवधि के साथ, एनिमल 1 दिसंबर को हिंदी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम में सिनेमाघरों में रिलीज की गई।

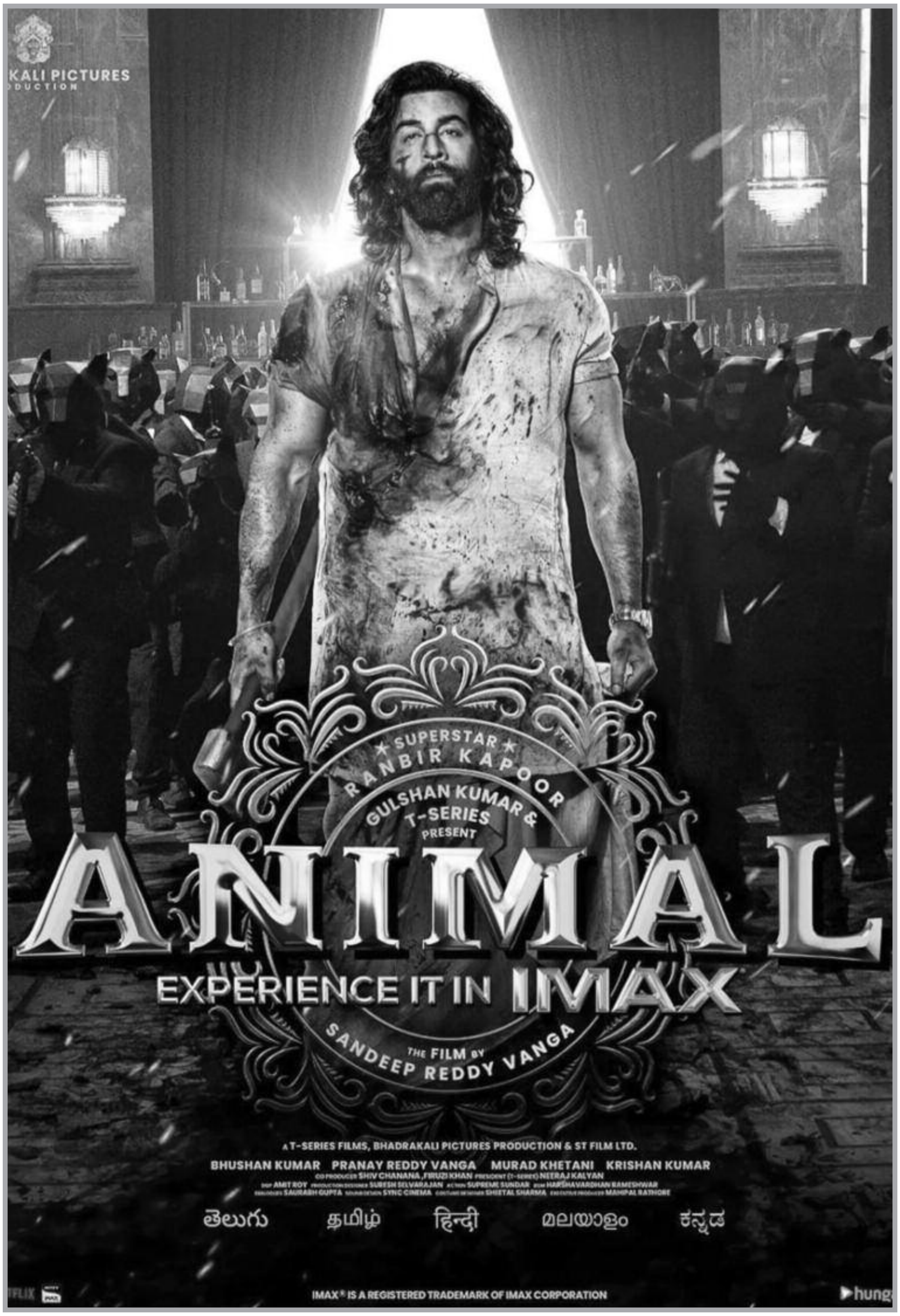

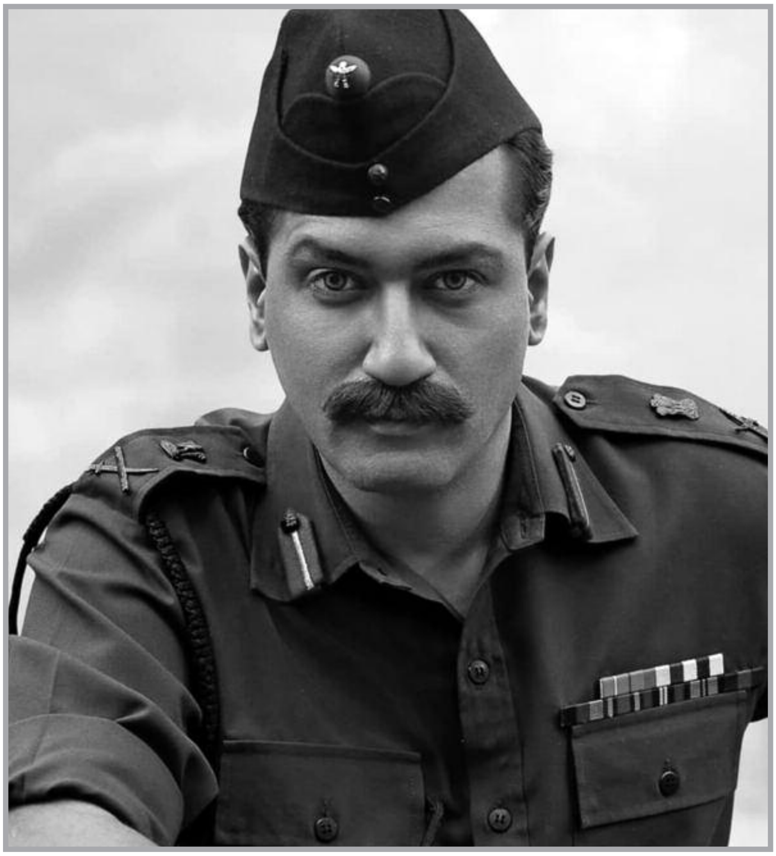

सैम बहादुर

मेघना गुलज़ार की सैम बहादुर में विक्की कौशल मुख्य भूमिका में होंगे। फिल्म में विक्की महान युद्ध नायक सैम मानेकशॉ की भूमिका में हैं और फातिमा सना शेख दिवंगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका में हैं। सैम बहादुर में सैम की पत्नी सिल्लू की भूमिका में सान्या मल्होत्रा भी हैं। ट्रेलर में विक्की तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी सहित कई हाई-प्रोफाइल नेताओं के खिलाफ अपनी बात रखते हुए, अपने साथी सैनिकों से कड़ी बात करते हुए दिखाई देते हैं। यह फिल्म 1960 के दशक के अंत और 70 के दशक की शुरुआत पर आधारित है। सैम बहादुर भारत के पहले फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के जीवन पर आधारित है। सेना में उनका करियर चार दशकों और पांच युद्धों तक फैला रहा। वह फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत होने वाले पहले भारतीय सेना अधिकारी थे और उन्होंने 1971 के भारत-पाक युद्ध में जीत का नेतृत्व किया, जिसके कारण बांग्लादेश का निर्माण हुआ। सैम बहादुर को भी 1 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज की गई। इसे भवानी अय्यर, शांतनु श्रीवास्तव और मेघना गुलज़ार ने लिखा है। फिल्म, जिसे पंजाब, कश्मीर और दिल्ली सहित अन्य स्थानों पर शूट किया गया था, रॉनी स्क्रूवाला की आरएसवीपी मूवीज़ द्वारा निर्मित है।

डंकी

डंकी शाहरुख खान और फिल्म निर्माता राजकुमार हिरानी की पहली फिल्म है। डंकी को चार दोस्तों और विदेशी तटों तक पहुंचने की उनकी खोज की दिल छू लेने वाली कहानी के रूप में जाना जाता है। यह उनके सपनों को साकार करने के लिए शुरू की जाने वाली कठिन और जीवन बदलने वाली यात्रा को दर्शाती है। डंकी के ट्रेलर की शुरुआत शाहरुख के मुख्य किरदार हार्डी से होती है, जो चलती ट्रेन के डिब्बे के दरवाजे के किनारे खड़े होकर अपना चेहरा दिखाता है। वह 1995 के लल्टू नामक गांव के समय के बारे में बताते हैं। वह अपने दोस्तों का परिचय कराता है, जिसमें सुखी (विक्की कौशल) शामिल है, जिसे अंग्रेजी सीखने में परेशानी होती है, और मन्नू (तापसी पन्नू), जो हार्डी का बचाव करने के लिए हमेशा तैयार है, जब उसकी खराब अंग्रेजी का मजाक उड़ाया जाता है। बोमन ईरानी को उनके अंग्रेजी शिक्षक के रूप में पेश किया जाता है जो उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण देने का वादा करता है ताकि वे विदेश में रहने के लिए योग्य हो सकें। डंकी शाहरुख की इस साल की तीसरी फिल्म है। इस साल की शुरुआत में, उन्होंने पठान और जवान में अपनी एक्शन से भरपूर भूमिकाओं से दर्शकों का मनोरंजन किया। शाहरुख और पत्नी गौरी खान की रेड चिलीज एंटरटेनमेंट, जियो स्टूडियोज और राजकुमार हिरानी फिल्म्स द्वारा निर्मित, डंकी 21 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होनी है।

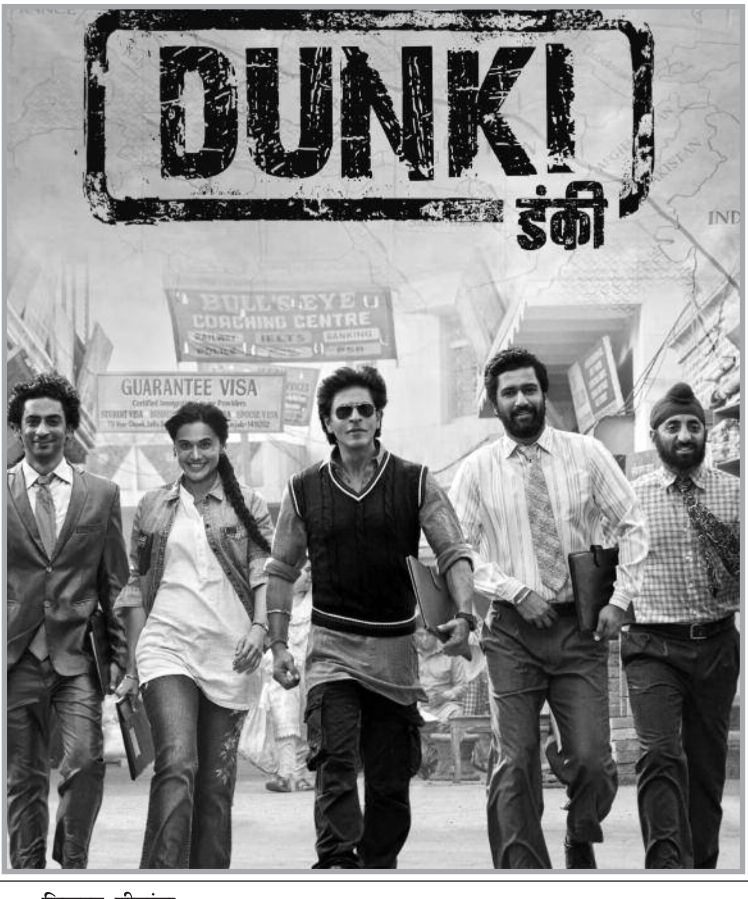

सलार: प्रभास का कमबैक

मीमांसा डेस्क

पैन इंडिया स्टार प्रभास साल के आखिर में सलार फिल्म से कमबैक करने की तैयारी में हैं। फिल्म का पहला पोस्टर जारी होने के बाद से ही दुनियाभर में इसे लेकर क्रेज देखने को मिल रहा है। बाहुबली के बाद से एक हिट फिल्म की तलाश कर रहे प्रभास के लिए सलार संजीवनी बनकर सामने आ सकती है। सलार में प्रभास का धमाकेदार एक्शन देखने को मिलेगा। केजीएफ का निर्देशन करने वाले प्रशांत नील ने सलार का निर्देशन किया है। जिस तरह से केजीएफ ने एक्शन की एक नई मिसाल कायम की है, उसी तरह की उम्मीद सलार से भी की जा रही है। शुरुआत में अंदाजा लगाया जा रहा था कि सलार भी केजीएफ यूनीवर्स की फिल्म होगी, लेकिन प्रशांत नील ने स्पष्ट किया है कि सलार और केजीएफ का कोई कनेक्शन नहीं होगा। वैसे भी साहो, राधेश्याम और आदिपुरुष के बाद से प्रभास को ऐसे ही किसी किरदार की जरूरत है, जो उन्हें फिर लोगों के बीच स्थापित कर सके। बॉक्स ऑफिस पर सलार का क्लैश शाह रुख खान की डंकी से होना है। पठान और जवान के रूप में इस साल दो हिट फिल्में देकर शाह रुख का उत्साह भी चरम पर है। ऐसे में सलार और डंकी का क्लैश और भी रोचक हो गया है।

प्रभास के लिए सलार की अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि बाहुबली के बाद से उनकी कोई भी फिल्म दर्शकों पर अपना जादू नहीं छोड़ पाई है। यहां तक कि अब उन्हें पैन इंडिया स्टार कहने पर भी सवाल उठने लगे हैं। आलोचक यहां तक कहने लगे हैं कि बाहुबली भी एसएस राजामौली की फिल्म थी, इसीलिए दर्शकों को लुभाने में कामयाब रही। प्रभास की प्रतिभा पर सवाल उठाए जा रहे हैं। लोगों का कहना है कि प्रभास अपने दम पर कोई फिल्म हिट कराने में सक्षम नहीं रह गए हैं। पहले साहो और राधेश्याम की विफलता के बाद इस साल आदिपुरुष जिस तरह से फ्लॉप हुई है, उसने प्रभास के सामने चुनौती खड़ी कर दी है। सलार से प्रभास पूरी तरह एक्शन अवतार में दिखने की तैयारी में हैं। फिल्म के फर्स्ट लुक से ही लोगों में उम्मीद जग गई है। दूसरी ओर प्रशांत नील जैसा निर्देशक होने से भी उम्मीद बढ़ गई है। कुल मिलाकर 2023 का अंत धमाकेदार फिल्म से होने की उम्मीद है।

विकल्प मीमांसा

मासिक समाचार पत्रिका

देश भर में प्रसारित करने, इससे जुड़ने व इसके ब्यूरो के लिये उत्सुक पत्रकार संपर्क करें।

आप हमें अपनी विस्तृत जानकारी इस ईमेल पते पर भेज सकते हैं :

vikalpmimansa@yahoo.in

आप हमें फोन से भी संपर्क कर सकते हैं।
हमारा संपर्क सूत्र है : 09350993815

R.N.I. No. DELHIN/2014/57556

PATHEYA

PATHEYA

पाथेय

(पीपल्स एशोसियेशन फॉर टोटल हेल्प एंड यूथ अप्लाउज)
आर जेड-एच-15/9, गुरूद्वारा रोड, महाबीर इन्क्लेव, पालम-डाबरी मार्ग, नई दिल्ली-110045
सम्पर्क - 011-20900689, 9953396877
Email pathey_ngo@yahoo.co.in ,patheyango7@gmail.com
Website www.patheyaonline.com